समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अगस्त २०११ • वर्ष ६२ • अंक ८

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

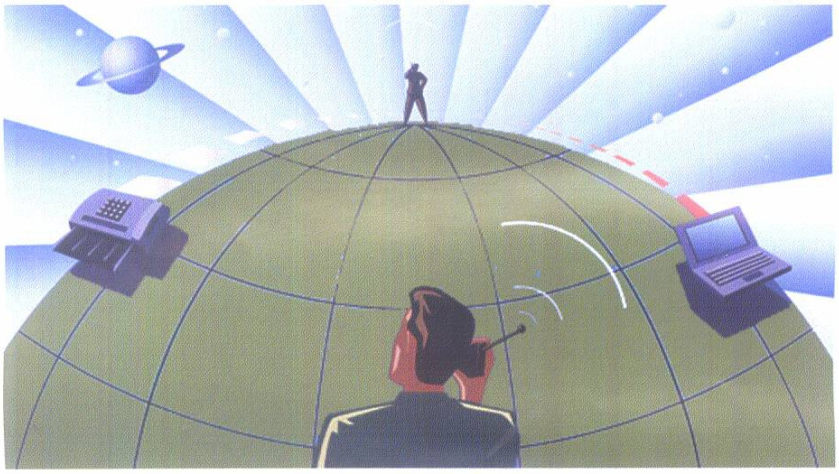

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

समाज विकास

◆ अगस्त २०११ ◆ वर्ष ६२ ◆ अंक ८ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : अन्ना बनाम सरकार – ***सीताराम शर्मा***	५-७
Anna SMS	८
गांधी विचारों के प्रतिमूर्ति हैं, अन्ना हजारे	९
भारत स्वर्णिम दौर की ओर – ***रामअवतार पोद्दार***	९
कविता - जन-जन का गुहार जन-लोकपाल/ चिंगारी	१०
अध्यक्षीय : जागे! अमेरिका कर्ज में डूब रहा हैं..... ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	११
धर्म के नाम पर भी दिखावा – ***संतोष सराफ***	१३
अखिल भारतीय समिति के सदस्यों की सेवा में सूचना	१५
स्वाधीनता दिवस पर सम्मेलन भवन में झंडोत्तोलन	१७
विवाह-समारोह में बढ़ते दिखावे व प्रदर्शन पर चिन्ता	१८
बाढ़ पीड़ितों हेतु मारवाड़ी सम्मेलन ने दी राहत सामग्री	१९
स्थायी समिति की बैठक	२०
राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न	२१
गीत – ***युगल किशोर चौधरी / डॉ. शंकर लाल स्वामी***	२३
कविता – ***विमल कुमार***	२४
कविता – नई सरकार, नई उम्मीदें – ***ताऊ शेखावाटी***	२५
व्यंग्य – फटी जीन्स – ***शमीम शर्मा***	२५
प्रान्तीय समाचार – जोरहाट शाखा का स्वाधीनता दिवस समारोह	२६
प्रान्तीय समाचार – बिहार प्रादेशिक की मासिक रपट	२६
प्रान्तीय समाचार – उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन गठित	२७
प्रान्तीय समाचार – मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन का सावन महोत्सव	२८
SMS की दुनिया / लघुकथा	२९
हंसगुल्ले	३०
कविता – बंद नहीं बदलाव चाहिए	३०
अश्लीलता के खिलाफ लामबंद हों – ***भानीराम सुरेका***	३१
वृद्धावस्था जीवन का अभिशाप नहीं, वरदान है – ***मुकुन्ददास माहेश्वरी***	३२
व्यंग्य – फ़िक्र कर अमीरों की ग़ालिब... – ***स्वामी नित्यानंद***	३३
कविता – ***रामचरण यादव याददाश्त। शिव सारदा***	३४

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

हरियाणा राज भवन,
चण्डीगढ़ - 160019

HARYANA RAJ BHAVAN,
CHANDIGARH - 160019

No.HRB-PSG-2011 | 1987
July 8, 2011

Dear Shri Saraf Ji,

I write this letter to convey my thanks to All India Marwari Federation for inviting me to be the Chief Guest on the occasion of "Felicitation Ceremony" on 25th June, 2011 at Kolkata. This provided me an opportunity to interact with the distinguished gathering present on the occasion. The function was well organized and I felt honored to be amidst such elite gathering.

With best wishes and kind regards,

Yours sincerely,

(Jagannath Pahadia)

Shri Santosh Saraf,
Honorary General Secretary,
All India Marwari Federation,
152-B, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata – 700 007

EPABX 0172 - 2740581, 2740583 FAX - 0172 -2740557 E-mail : governor@hry.nic.in

शोक संदेश

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रमुख स्तंभ और समाज के भीष्म पितामह श्री नन्दकिशोर जालान के महाप्रयाण से मार्मिक वेदना हुई। उनका सारा जीवन सम्मेलन और समाज के लिए समर्पित था और वे सम्मेलन के पर्याय बन चुके थे। समाज विकास के संपादक के रूप में भी उन्होंने अपनी लेखनी से समाज को नई दिशा दी। उनके पद चिन्हों पर चलकर नये समाज का निर्माण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से करबद्ध प्रार्थना एवं शोक-संतप्त परिजनों के लिए हार्दिक संवेदना।

युगल किशोर चौधरी
चम्पारन (बिहार)

चिट्ठी आई है

चुटकी में सुरसत कृपा

जी हां यही सत्य है। विद्या और बुद्धि की दात्री मां सरस्वती को जब अपने किसी भक्त पर कृपा की वृष्टि करनी होती है, वे तब जाने कब, कहां, कैसे और किस रूप में, चुटकी में ही ऐसा चमत्कार कर देती हैं, जिससे उस भक्त का जीवन तत्क्षण अमरत्व को प्राप्त हो जाता है।

ऐसा ही एक चमत्कार पिछले दिनों देखने में आया जब स्व. नंद किशोर जालाण के व्यक्तित्व को अमरत्व प्रदान करने हेतु मां वीणपाणि साक्षात् रूप से समाज विकास पत्रिका के संपादक श्री सीताराम शर्मा की कलम से प्रकट हुई और **"मारवाड़ी सम्मेलन यानि नंद किशोर जालान"** जैसे शीर्षक से उन्हें अपना संपादकीय लिखने की प्रेरणा प्रदान की।

वाह री मेरी मां! तेरी जय हो। शीर्षक पढ़कर लगा जैसे मारवाड़ी सम्मेलन और नंद किशोर जालान दोनों व्यक्ति-वाचक संज्ञाएं एक दूसरे में घी और खीचड़ी की तरह जमा गए हैं, जो लाख प्रयत्न करने पर भी अब अलग-थलग नहीं किए जा सकते। मेरे खयाल से स्व. जालान को इस वाक्य से श्रेष्ठ श्रद्धांजलि और कुछ भी नहीं हो सकती। वैसे जालान जी जैसे विराट व्यक्तित्व के लिए जितना लिखा जाए, कम है।

प. ताऊ शेखावाटी
सवाई माधोपुर

बधाई

समाज विकास बहुत सुन्दर निकल रहा है, इसे बनाये रखें।

मोहनलाल तुलस्यान
पूर्व अध्यक्ष, अ.भा.मा. सम्मेलन

अध्यक्षीय

जागे! अमेरिका कर्ज में डूब रहा हैं, अब सादगी का मंत्र जप रहा हैं।

– हरि प्रसाद कानोड़िया

मारवाड़ी समाज वर्त्तमान समय में अपने नैतिक मूल्य को भूलता जा रहा हैं। आज वह अपने समाज की सभी मौलिक विचारधाराओं को पीछे छोड़ता जा रहा है। समाज में जगह - जगह पर आडम्बर का बोलबाला है, लोग कही शादी – विवाह में तो कही जन्म दिवस मनाकर फिजूल का खर्चा कर धन नष्ट कर रहे हैं। अब तो लोग शादी के सालगिरह और पूजा पाठ के नाम पर भी व्यर्थ का खर्चा कर रहे है, लोग भागवत् और कीर्तन के नाम पर लाखों रूपया का व्यय करते है। कहने का साफ अर्थ है कि आज लोग सादगी को भूल रहे है, जो हमारे समाज की उन्नति की नींव हैं। हम साफ देख रहे है कि आज अमेरिका कर्ज में डूब रहा है, अब सादगी का मंत्र जप रहा है। कुछ वर्ष पहले तक लोगों मे समाज के प्रति प्रेम और उदगार हुआ करता था। समाज के प्रति कुछ करने और कुछ कर दिखाने का जज्बा होता था। उस समय फिजूलखर्ची एवं आड़म्बर का विरोध करते हुए स्व. भंवरमल जी सिंघी स्वं. सुशील सिंघी, बजरंग लाल लाठ, नन्द लाल सुरेका, दीप चन्द्र नाहटा, मोहन लाल चोखानी आदि समाज के वरिष्ठ लोगों ने विवाह स्थलों के बाहर मूक प्रदर्शन कर सारे भारत में आन्दोलन छेड़ा था।

आज अपने समाज की बहू - बेटियां शादी-विवाहों तथा अन्य समारोह में आधुनिक फिल्मों पर आधारित संगीत सम्मेलन आदि करती है, इसके साथ ही वह अपने समाज के रीति रिवाज को तथा अपने राजस्थानी लोक संगीत को पीछे छोड़ते जा रहे है। समाज अपनी संस्कृति को खोता जा रहा हैं। आज सारे विश्व में मारवाड़ी समाज की पहचान हमारे परोपकारी प्रवृति का ही परिणाम हैं।

आज के समय में ज्यादातर धर्मशालाएं, स्कूल एवं अस्पताल आदि जितनी संस्था है, अधिकांश मारवाड़ी समाज की ही देन है। धन अर्जित करना और उसे समाज कल्याण के कार्यों में खर्च करना मारवाड़ी समाज की प्रवृति हुआ करती थी। हमें समझना चाहिए कि मारवाड़ी समाज ही वह समाज है, जो हमेशा से परोपकार रहा है और दसरों की मदद के लिए बहुत सारे कार्य करता आया है।

उदाहरणार्थ आदरणीय घनश्यामदास जी बिड़ला को ही लिया जाए। उनका जन्म १८९४ में राजस्थान के पिलानी नामक गांव मे हुआ। वे अपनी आरंभिक शिक्षा प्राप्त कर कलकत्ता आये। वे उस समय एक साधारण आदमी की तरह थे। लेकिन उनमें समाज के प्रति कुछ कर दिखाने, कुछ करने का जज्बा था। १९१२ मे किशोर अवस्था मे ही श्री बिड़ला जी अपने ससुर एम. सेमानी की मदद से दलाली का व्यापार शुरु किये। उसके बाद १९१८ मे बिड़ला ब्रदर्स की स्थापना की। वे आगे बढ़ते ही गये और एक नया इतिहास रच दियें। परन्तु इतना सब कुछ हासिल करने के बाद भी वे अपने कर्तव्य और समाज के नैतिक मूल्यों को नही भूले। अपने समाज की सेवा तन मन धन से की एवं समाज में अपनी एक नई पहचान हासिल की। अपने समाज मे ऐसे बहुत से रत्न उत्पन्न हुए, जिन्होंने समाज को बहुत कुछ प्रदान किया लेकिन वर्तमान में समाज पथभ्रमित हो रहा है।

संत तुलसीदास जी की इन पंक्तियों से हमें प्रेरणा लेनी चाहियें :-

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
निर्णय सकर पुरान वेद कर। कहेउं तात जानहिं कोविद नर।।

हे भाई। परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुंचाने के समान कोई पाप नहीं है। हे तात, सभी पुराणों और वेदों का यह निर्णय मैंने तुमसे कहा है, इसे विद्वान पुरुष जानते हैं।

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

धर्म के नाम पर भी दिखावा

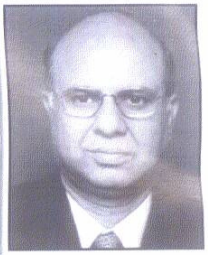

संतोष सराफ
महामंत्री

कथावाचकों-प्रवचन करने वाले संतों-महापुरुषों को ऐसे धार्मिक-आध्यात्मिक अनुष्ठानों का बहिष्कार करना चाहिए, जिसमें बेवजह अनावश्यक 'ताम-झाम' के लिए पैसों की बर्बादी की जाती हो। जब तक कथावाचक स्वयं इस प्रवृत्ति के खिलाफ आवाज नहीं उठाएंगे तब तक धर्म के नाम पर आडम्बर बढ़ता ही रहेगा।

मारवाड़ी समाज जहां भी गया, अपनी पहचान बनाई। शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र या सामाजिक जीवन का पहलू बचा हो, जहां मारवाड़ी समाज के लोगों की मौजूदगी का एहसास नहीं होता हो। पहचान बनाने के पीछे कुछ ठोस वजहें भी रही हैं। दरअसल इस समाज को हमेशा से सहिष्णु, शांत और सदविचार वाला माना जाता रहा है। व्यावहरिक तौर पर भी यह समाज कसौटी पर हमेशा खरा उतरा है। समाज के लोग जहां भी गए, वहां के लोगों के साथ हिलमिल गए, रच-बस गये। उद्योग और व्यापार का विस्तार किया, कमाई की और कमाई का एक निश्चित हिस्सा सामाजिक कल्याण के कामों में खर्च किया। अस्पताल, स्कूल, कॉलेज और धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। समाज के गरीब व आर्थिक दृष्टि से कमजोर तबके के लोगों को हरसंभव सहयोग किया। इस तरह से इस समाज की पहचान एक उदारमना, दानदाता और समाजसेवी के रूप में बन गई है। आज भी लोग कमोबेश मारवाड़ी समाज को इसी नजरिए से ही देखते हैं लेकिन यह भी एक कड़वा सच है कि अब लोग मारवाड़ी समाज को दिखावा, आडम्बर और फिजूलखर्ची के लिए भी जानने लगे हैं। दिखावा-आडम्बर के खिलाफ बहुत पहले से ही चेतावनियां दी जाने लगी थीं। इसके खिलाफ आंदोलन भी हुए। गंभीर चर्चाएं हुईं, अपीलें की गईं लेकिन दुर्भाग्यवश 'ढाक के तीन पात' वाली स्थिति बनी हुई है। लोग फिजूलखर्ची करने के पीछे तमाम तरह के तर्क देते हैं। अक्सर लोगों को कहते सुना जाता है कि अगर हमने मेहनत से धनोपार्जन किया है और विशेष अवसरों पर खर्च करते हैं तो इसमें हर्ज क्या है? सुनने में यह बात तो सीधी-सादी जरूर लगती है लेकिन इस विषय पर अगर गंभीरता से सोचा जाए तो शायद अपने-आप से ही उत्तर मिल जाएगा। समाज के समर्थ, सक्षम और शिक्षित लोग जो रास्ता अपनाते हैं, जिस रास्ते से चलते हैं, पूरा समाज हमेशा से वही मार्ग अपनाता रहा है। अगर समर्थ लोग धन का फूहड़ प्रदर्शन करेंगे तो निश्चित तौर पर उंगली उठेगी। लोग अच्छी नजरों से नहीं देखेंगे। ईर्ष्या-द्वेष की भावना पनपेगी और धीरे-धीरे यह भावना खौफनाक रूप धारण कर लेती है। अभी तक तो समाज के लोग अपनी बेटी-बेटे की शादी के अवसर पर ही अनाप-शनाप खर्च करते थे। बेवजह दिखावा और आडम्बर करते थे लेकिन पिछले कुछ समय से धर्म के नाम पर भी दिखावा काफी बढ़ गया है। धर्म के नाम पर दिखावा कितना उचित है, धर्म के नाम पर पानी की तरह पैसा बहाना कितना मुनासिब है? अपने-आप से सवाल-जवाब करने की जरूरत है। वेद-शास्त्रों में भी धन का सदुपयोग करने की बात कही गई है। हम धार्मिक अनुष्ठानों, भजन-कीर्तन, कथाओं के नाम पर लाखों-करोड़ों रुपये खर्च कर क्या हासिल करते हैं? क्या धार्मिक अनुष्ठान कम खर्च में नहीं किए जा सकते? क्या कम खर्च कर आयोजित किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों से कम पुण्य की प्राप्ति होती है? अगर ज्यादा धन खर्च करने से ही भगवान प्रसन्न होते तो शायद देश के तमाम धनी लोग अब तक भगवान को अपने वश में कर चुके होते। जितना धन हम धार्मिक अनुष्ठानों, भजन-कीर्तन के कार्यक्रमों में खर्च करते हैं, उसका कुछ हिस्सा अगर हम अब तक इकट्ठा करते तो शायद कोलकाता महानगर और इसके आसपास के इलाकों में अब तक बहुत सारे स्कूल, कॉलेज, अस्पताल और धर्मशालाओं का निर्माण हो गया होता। हमारे समाज के पूर्वजों ने वर्षों पहले जो स्कूल-कालेज बनवाए थे, वही दिख रहे हैं। नए सिरे से दो-चार जगहों की बात अगर छोड़ दें तो पता चलता है कि अब स्कूल-कॉलेज बनवाने की परंपरा ही खत्म हो गई है। जो स्कूल-कॉलेज या अस्पताल-धर्मशाला हाल के समय में बने भी हैं, उनका उद्देश्य पूरी तरह से व्यावसायिक है। अभी समय है, समाज को धर्म के नाम पर अनाप-शनाप खर्च करने की परंपरा को तोड़ देना चाहिए। धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होने वाले भजन गायकों और कथावाचकों को भी इस संबंध में गंभीरता से सोचने की जरूरत है। हमारे देश में एक से बढ़कर एक प्रवचन करने वाले, धर्म का उपदेश देने वाले संत हैं, जिन्हें ऐसे धार्मिक कार्यक्रमों में जाने से परहेज करना चाहिए, जिनमें अनावश्यक रूप से अनाप-शनाप धन खर्च किया जाता है।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

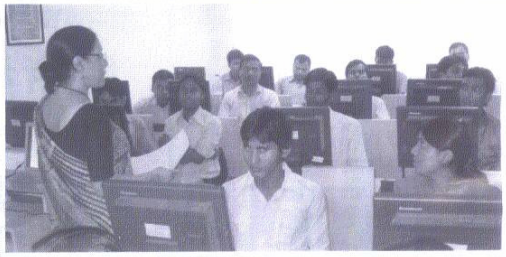

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English
- Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- **Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi**
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Diploma in Banking and Finance
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतीय समिति के सदस्यों की सेवा में सूचना

प्रिय महोदय,

दिनांक : ०१-०८-२०११

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति के आप पदेन / निर्वाचित / मनोनीत सदस्य हैं। समिति की आगामी वैठक शनिवार, ३ सितम्बर २०११ को उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में 'जयदेवा भवन' (सूचना भवन), सचिवालय मार्ग, भुवनेश्वर में दोपहर २.०० बजे से आयोजित की गई है। सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया करेंगे।

इस वैठक में आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

भवदीय

संतोष सराफ, *राष्ट्रीय महामंत्री*

विचारार्थ विषय :-

१. अध्यक्ष का उद्‌बोधन
२. गत वैठक की कार्यवाही पारित करना
३. महामंत्री की रिपोर्ट
४. आर्थिक स्थिति की समीक्षा
५. भावी कार्यक्रमों सम्बन्धी प्रस्ताव
६. संगठन सुझाव
७. विविध – अध्यक्ष की अनुमति से

नोट :

- सदस्यों से अनुरोध है कि कृपया वे अपने आगमन एवं प्रस्थान सम्बन्धी सूचना १. श्री मनसुखलाल सेठिया (०९४३७० १३६६४), २. श्री उमेश खण्डेलवाल (०९४३७० ७०२८९), ३. श्री दिनेश अग्रवाल (०९४३७२ ६३६०४) को प्रेषित करने की कृपा करें जिससे कि आवश्यकतानुसार स्वागत एवं निवास आदि की व्यवस्था की जा सके।
- सम्मेलन के संविधान के अनुसार, समिति के केवल निर्वाचित एवं मनोनीत श्रेणी के सदस्य वर्तमान सत्र (२०११-२०१२) हेतु २०२/- रुपया सदस्यता शुल्क सम्मेलन में शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें।
- सम्मेलन के सभी सदस्यों की डायरेक्टरी का प्रकाशन सितम्बर २०११ में ही किये जाने का प्रस्ताव है। अतः निवेदन है कि अपना बॉयोडाटा एवं दो पासपोर्ट साईज फोटो शीघ्र सम्मेलन कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सूचना

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की **वार्षिक साधारण सभा शनिवार**, २४ **सितम्बर २०११** को **शाम ४.०० बजे** सीटीसी हॉल, १२, आर.एन. मुखर्जी रोड, ४ तल्ला, कोलकाता-१ में निम्नलिखित विषयों के विचारार्थ आयोजित की गई है।

१. सम्मेलन के वित्तीय वर्ष २०१०-२०११ के आय-व्यय का लेखा-जोखा तथा संतुलन पत्र, जैसा कि लेखा परीक्षकों द्वारा जाँचा गया है, को स्वीकृत करना।
२. सम्मेलन के २०१०-११ वर्ष के क्रियाकलाप का प्रतिवेदन प्रस्तुत करना और उस पर चर्चा।
३. लेखा परीक्षक की नियुक्ति करना।

भवदीय

दिनांक : १२-०८-२०११

संतोष सराफ, *राष्ट्रीय महामंत्री*

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
• Front-lit-flex
• Back-lit-flex
• Woven P/E
• Self Adhesive vinyl
• Building wrap
• One way vision
• Vehicle / fleet graphics
• Floor and wall graphics
• Reflective Signage
• Frosted vinyl
• Canvas
• Translite
• Photo realistic poster paper
• Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

स्वाधीनता दिवस पर सम्मेलन भवन में झंडोत्तोलन

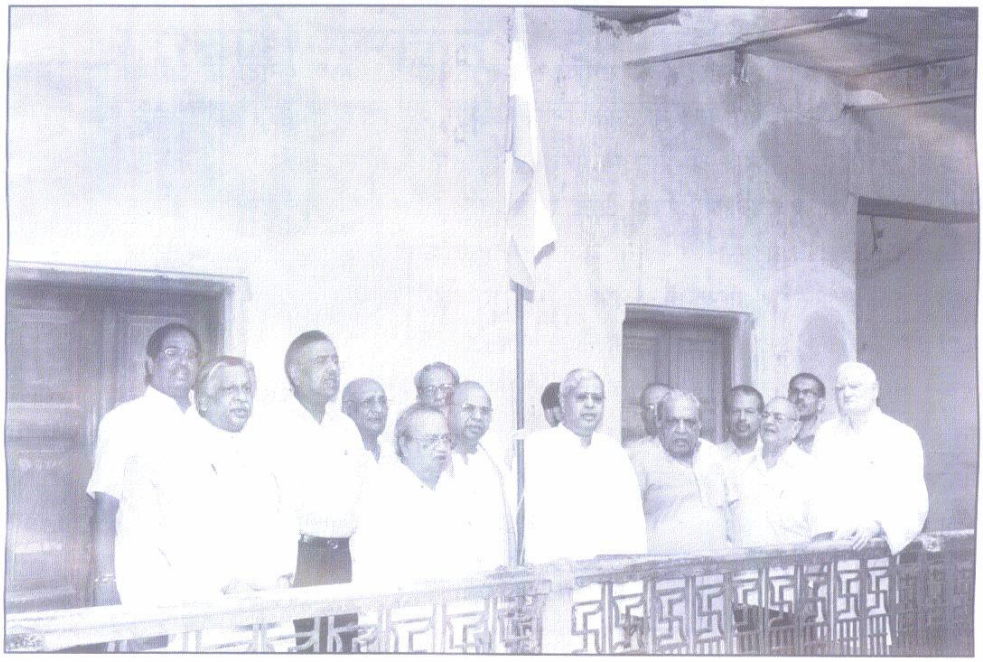

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सम्मेलन भवन में झण्डोत्तोलन करते हुए
सम्मेलन के उप-सभापति श्री राम अवतार पोद्दार

स्वाधीन भारत के ६५वें स्वतंत्रता दिवस पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। झंडोत्तोलन किया सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री पोद्दार ने कहा कि आज का दिन इस लिए महत्वपूर्ण है कि हमें अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली। लेकिन इस आजादी को अब चन्द भारतीयों ने ही गुलाम बना रखा है। जब तक इन भ्रष्ट लोगों से देश को मुक्ति नहीं मिलती, हम सच्ची आजादी का सुख नहीं पा सकते। पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि आज भ्रष्टाचार महत्वपूर्ण सवाल है। किंतु यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर कोई दल या व्यक्ति विरोध प्रकट नहीं कर सकता। भ्रष्टाचार रुपी इस दानव के दमन के लिए एक सफल एवं सशक्त लोकपाल बिल की आवश्यकता है, तभी सही अर्थों में हम आजादी का त्यौहार मनाने के हकदार है। मौके पर पूर्व अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा एवं श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री राम निवास चोटिया, श्री रवीन्द्र लड़िया, श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री गोविन्द जैथलिया आदि कई लोग उपस्थित थे।

लघुकथा

पिंजरे में कैद अस्तित्व

"चुट्ठीभर रूपल्ली में किस-किस को खिलाऊ" – माँ ने थोड़े झुंझलाते हुए कहा था। उसने पिंजरे में कैद पहाड़ी तोतों को एक बार देखा और फिर आहिस्ता से पट खोल दिए। सहमें-सहमे बाहर निकले-परिंदे। पंख फड़फड़ाए। टॉव-टॉव चिल्लाए और शून्य की तरफ उड़ चले।

वह देर तक खोया रहा सूने आकाश में और फिर कैद हो गयी दोनों आँखें पिंजरे के तार में। *(पास-पड़ोस साभार)*

विवाह-समारोह में बढ़ते दिखावे व प्रदर्शन पर चिन्ता

श्री जे. के. सराफ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की समाज सुधार कमेटी की बैठक कमेटी के अध्यक्ष श्री जुगल किशोर सराफ के सभापतित्व में उनके निवास स्थान पर हुई। बैठक में पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, श्री प्रह्लादराय अग्रवाल, श्री पुष्करलाल केडिया आदि उपस्थित थे। इस बैठक में अध्यक्ष श्री सराफ ने समाज में बढ़ रहे दिखावे व प्रदर्शन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि इसकी रोकथाम हेतु हमें सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। धार्मिक आयोजनों में बढ़ रहे दिखावे व फिजूलखर्ची पर भी चिन्ता जाहिर की गई। श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि कोलकाता से ही इन बुराईयों का जन्म होता है इसलिए हमें यहीं से इसके सुधार की प्रक्रिया शुरू करनी होगी। श्री प्रह्लादराय अग्रवाल ने सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि विरोध एवं आन्दोलन की बजाय निवेदन एवं अपील का माध्यम अपनाना ही उचित होगा। सुझाव को स्वीकार करते हुए बैठक में निर्णय लिया गया कि आगामी दिनों महानगर में होने वाले विवाह समारोह की जानकारी एकत्रित कर सम्बन्धित वर व वधू पक्षों को सम्मेलन की ओर से अनुरोध पत्र भेजा जायेगा जिसमें शादी के महंगे कार्ड न छपवाने तथा विवाह समारोह में सादगी बरतने की अपील की जायेगी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया।
- अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह मे दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपाएं।
- नेग का कार्यक्रम एक ही हो।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष भी वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब आदि का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

सम्मेलन धार्मिक व अन्य सामाजिक समारोहों में भी सादगी बरतने की अपील करता है।

बाढ़ पीड़ितों हेतु
मारवाड़ी सम्मेलन ने दी राहत सामग्री

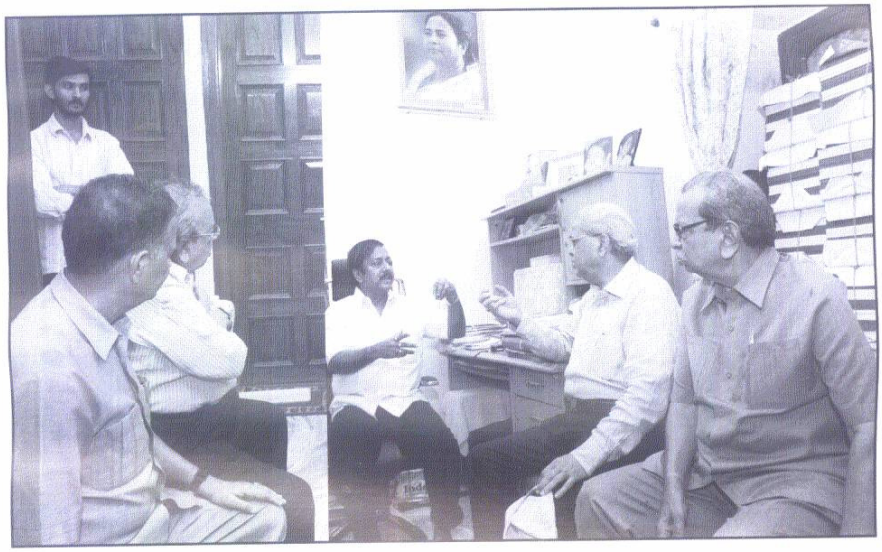

पश्चिम बंगाल सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री श्री ज्योतिर्मय मल्लिक के साथ – सीताराम शर्मा, राम अवतार पोद्दार, आत्माराम सोंथालिया एवं प्रेमचन्द सुरेलिया।

राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की अपील पर गौर करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने भीषण वर्षा से प्लावित हुए अंचल में राहत सामग्री भेजने का निर्णय लिया। इस निर्णय के तहत १३ अगस्त को राज्य के खाद्य व आपूर्ति मंत्री ज्योतिप्रिय मल्लिक को २० कार्टून विस्कुट सौंपे गये, जो कि हासनाबाद अंचल में बाढ़ पीड़ितों में वितरित करने हेतु भेजे गये। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, प्रेमचन्द सुरेलिया आदि की मंत्री महोदय से बाढ़ पीड़ितों के सम्बन्ध में विस्तारित चर्चा हुई। श्री मल्लिक ने बताया कि बाढ़ पीड़ित अंचलों में चावल-दाल, सब्जी, विस्कुट आदि की अत्यधिक आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि स्थानीय एस.डी.पी.ओ. के माध्यम से पका हुआ भोजन स्थानीय प्रशासन की देखरेख में वितरित किया जा रहा। इस दौरान पुलिस की भी मदद ली जा रही है क्योंकि सीधे तौर पर राहत सामग्री वितरण करने पर लूटपाट हो जाती है और दुर्घटना की आशंका भी बनी रहती है। मंत्री ने बताया कि राज्य में आई बाढ़ का जायजा ममता बनर्जी स्वयं ले रही हैं और उन्हीं के निर्देशानुसार विभिन्न अंचलों में राहत भेजी जा रही है। पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि मंत्री महोदय से राहत को लेकर विस्तारित चर्चा हुई और सम्मेलन इस दिशा में और भी कदम उठायेगा। उन्होंने बताया कि हासनाबाद में मंत्री की प्रत्यक्ष देखरेख में राहत सामग्री का वितरण हो रहा है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने बताया कि सम्मेलन आर्थिक अनुदान की बजाय राहत सामग्री देने का पक्षधर है। उल्लेखनीय है कि सम्मेलन ने इसके पहले भी सुन्दरवन में आए आयला तूफान हो या फिर टेंगरा में लगी भयावह आग, उड़ीसा एवं विहार में आई भीषण बाढ़ के समय भी राहत सामग्री का वितरण किया था।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

स्थायी समिति की बैठक

स्थायी समिति के बैठक में विचार विमर्श करते सम्मेलन के पदाधिकारी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक २० अगस्त को सम्मेलन भवन में उपसभापति रामअवतार पोद्दार की अध्यक्षता में हुई। बैठक में श्री पोद्दार ने बताया कि उच्च शिक्षा हेतु सहयोग देने की दिशा में सम्मेलन कदम आगे बढ़ा रहा है। शीघ्र ही इसकी प्रक्रिया शुरु हो जायेगी। समाज सुधार की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि समाज सुधार कमेटी की बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार आगामी दिनों में होने वाले विवाह समारोह में सम्बन्धित पक्षों (वर-वधू) से विवाह समारोह में सादगी बरतने की विनम्र अपील करने का निर्णय लिया गया था। उन्होंने सभी से निवेदन किया कि आगामी दिनों में होने वाले विवाह समारोह की जानकारी एवं सम्बन्धित पक्षों के पते उपलब्ध करवायें ताकि उन्हें पत्र भेजा जा सकें। महामंत्री संतोष सराफ ने विगत दिनों के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने आगामी ३ सितम्बर को भुवनेश्वर में होने जा रहे अखिल भारतीय समिति की बैठक में भाग लेने के लिए सभी सदस्यों से अनुग्रह किया। कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया ने वित्तीय स्थिति की जानकारी दी। उपस्थित सदस्यों ने विवाह समारोह के अलावा अन्य कार्यक्रमों में भी रूढ़िवादी परम्परा एवं दिखावे व प्रदर्शन का मुद्दा उठाते हुए कहा कि सम्मेलन को इस दिशा में भी चिन्तन करते हुए कदम उठाना चाहिए। बैठक में देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के मुद्दे पर गोष्ठी करने का प्रस्ताव दिया गया। संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। बैठक में संयुक्त महामंत्री कैलाशपति तोदी, जुगल किशोर जैथलिया, एडवोकेट नन्दलाल सिंहानिया, गोविन्द शर्मा, विश्वनाथ सिंहानिया, श्रीमती विमला डोकानिया, विश्वनाथ भुवालका, नन्दकिशोर अग्रवाल, ओम लडिया, राजेश पोद्दार, रामनिवास चोटिया, प्रेमचन्द सुरेलिया, के.के. डोकानिया, दिलीप गोयनका सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मारवाड़ी सम्मेलन ने बढ़ाया सहयोग का हाथ

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सहयोग का हाथ बढ़ाया है। कोलकाता चेंबर ऑफ कॉमर्स में आयोजित संस्था की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने बताया कि समाज में उच्च शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए एक शिक्षा कोष बनाया गया है जिसमें अब तक एक करोड़ पिचयासी लाख रुपये एकत्रित किये गए है। श्री कानोड़िया ने बताया कि इस विषय पर शिक्षा कमिटी के चेयरमैन श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल के साथ कई बैठकें की गयी ताकि दिशा निर्देश व मानदंड तय कर, मेधावी एवं जरुरतमंद बच्चों को उच्च शिक्षा के लिये उचित सहयोग दिया जा सकें। बैठक के आरम्भ में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष व रांची निवासी श्री हनुमान प्रसाद सरावगी के निधन पर उनकी आत्मशांति हेतु दो मिनट का मौन पालन किया गया।

इस अवसर पर सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने स्वर्गीय सरावगी के निधन को सम्मेलन के लिये अपूरणीय क्षति बताया एवं उनके उदार तथा विलक्षण व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। श्री शर्मा ने बताया कि उच्च शिक्षा कोष के लिए प्राथमिक स्तर पर दो करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य रखा गया था। उन्होंने कहा कि अभी तक प्राप्त धनराशि को एफ.डी. कर दी गयी है एवं इन्हीं रुपयों के ब्याज से प्राप्त राशि से सहायता प्रदान की जाएगी। सितंबर से छात्रों को सहायता मिल सकें, ऐसे प्रयास किये जा रहे है। बताया कि लक्ष्य पाँच करोड़ की राशि के संग्रह का है। श्री शर्मा ने स्पष्ट किया कि डायरेक्टरी में अभी एक महिने का समय और लगेगा तथा लेटर पैड़ में पदाधिकारियो के मोबाइल नम्बर दिये जाएंगे। पूर्व अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा ने कहा कि उच्च शिक्षा कोष के गठन की घोषणा राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंह जी पाटिल की उपस्थिति में पिछले वर्ष कौस्तुभ जयंती समारोह में की गयी थी। लक्ष्य ५ करोड़ इकट्ठा करने का था, जिसे पूरा करना है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने अपनी रपट में उच्च शिक्षा कोष में अब तक प्राप्त राशि का ब्यौरा दिया तथा सितम्बर मध्य तक साधारण वार्षिक सभा कराने की इच्छा व्यक्त की। कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथालिया ने लेखा परीक्षक द्वारा तैयार की गयी साल २०१०-११ की रपट पेश की एवं वर्ष भर की आमदानी एवं खर्च का रपोर्ट दिया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार ने अखिल भारतीय समिति की चुनाव प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि संविधान के मुताबिक सभापति को २१ अखिल भारतीय समिति के सदस्यों के मनोनयन का अधिकार है। भोपाल से पधारे श्री सुशील केजड़िवाल ने कहा कि जिन प्रांतों में सम्मेलन की शाखा नहीं है, वहाँ सम्मेलन के पदाधिकारी शाखा खुलवाने की चेष्टा करें। श्री महेश सहरिया ने सम्मेलन की बढ़ती गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि सम्मेलन निरंतर अपने लक्ष्य एवं उद्देश्यो की ओर बढ़ रहा है।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका एवं कैलासपति तोदी, विहार से पधारे राजेश बजाज, झारखंड के वसंत मित्तल, श्रीमती उमा सराफ, चन्दु लाल अग्रवाल आदि ने भी विचार रखें।

श्री नारायण प्रसाद माधोगड़िया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री रविन्द्र लड़िया, श्री नंदकिशोर अग्रवाल, श्री श्यामलाल डोकानिया, श्री गोविंद प्रसाद केजरीवाल, आदि भी बैठक में उपस्थित थे।

Amazing offer to all

Business Economics

Net Marketing. Be an Agent. Enroll at Rs. 500/-
Earn 25% commission or get following gift items:

Digital Camera
10 Subscribers for 3 years

80 Subscribers for 3 years
Complementary BBA/BCA Course Rs. 75,000 from IISD

Desktop Computer
30 Subscribers for 3 years

Laptop Computer
40 Subscribers for 3 years

Mobile Phone
5 Subscribers for 3 years

2GB Pen Drive
OR
Over night travel bag worth ₹ 360/-
for 1 year subscription

100 Subscribers for 3 years
Complementary MBA Course Rs, 85,000 from IISD

Subscribe Business Economics :

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie +2GB Pen Drive OR ☐ 8GB Pen Drive ☐ Books
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ 2GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ Exclusively for Students
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

A subscriber can buy any latest Book at 15% discount and/or indent against subscription as complementary

Business Economics — Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642. E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

गीत

आओ, मिलकर ध्वज फहरायें

– युगल किशोर चौधरी
चम्पारन (विहार)

आओ, मिलकर ध्वज फहरायें!
कोटि कोटि कंठों से मिलकर, राष्ट्र-गान प्यारा हम गायें।
वोल मातरम् वन्दे के हम, उच्च स्वरों में मिल गुंजायें।।
दीर्घ गुलामी खत्म हो गई, निर्धनता भी मिट जायेगी।
कठिन परिश्रम के करने से, धरती सोना उपजायेगी।।
मिलकर भारत सवल वनायें।

घर-घर शिक्षा-दीप जलाकर, अभिनव ज्ञान-ज्योति फैलायें।
मानवता हो साध्य हमारी, कदम मिलाकर वढ़ते जायें।।
गाँव, गरीवों की उन्नति कर, नया जमाना चम-चम लायें।
समरसता के फूल खिलाकर, भरत को खुशहाल वनायें।।
मंगल-घट पावन छलकायें।

नूतन साहस जगे देश में, मुख पर छाये नव अरुणाई।
अंतिम जन की किस्मत जागे, छाये तरुणों में तरुणाई।।
नव विकास हो नैतिकता का, दंभ, द्वेष, मत्सर मिट जायें।
सवसे ऊपर देश हमारा, सवमें यह भावना जगायें।
नव प्रकाश मिलकर फैलायें।

भारत हो सिरमौर विश्व का, वढ़कर सवको गले लगाये।
हो सर्वोदय, जन-गन मंगल, पाप-ताप सारे मिट जायें।।
सौ-सौ स्वर्ग धरा से उभरें, नूतन सुषमा चहुँदिशि छाये।
सद्भावों की नव सुगंध हो, वंशी नये स्वरों में गये।।
नई चेतना सव में छाये।
आओ, मिलकर ध्वज फहरायें।

गीत

– डॉ. शंकर लाल स्वामी
वीकानेर

बाधाओं को पांवों तले कुचलकर चलना है।
भारत मां के जन-जन की तकदीर वदलता है।।

आगे बढ़ने के विचार को आगे हमें बढ़ाना।
गांव गांव में भारत की प्रगति का सूर्य उगाना।
खुशहाली दर खुशहाली के सपने सदा सजाना।
उन सपनो को मेहनत के वल पर साकार बनाना।
हमें हिमालय के ऊंचे शिखरों पर चढ़ना है।।

आंधी और तूफान हमें भयभीत नहीं कर पाए।
वढ़ते कदमों के आगे मुश्किल आसां हो जाए।
दुनिया को रोशन करने को सूरज दौड़ लगाए।
उसने रुकना कव जाना चाहे लाख अड़चनें आए।
हर भारतवासी को वनकर सूर्य चमकना है।।

आए कोई चुनौती उससे लड़ना फर्ज हमारा।
रग रग में उत्साह हृदय में लिए प्रेम की धारा।
नेक इरादे नेक रास्ते नेकी का वंजारा।
इस दुनिया में सदा निराला रहा है भारत प्यारा।
शिक्षा और विकास के पथ पर आगे वढ़ना है।

रिश्वत की लंवी वेलें जड़ से उखाड़ फेंकेंगे।
भ्रष्टाचार मिटाकर के ही हम तुम सव दम लेंगे।
सच्चाई ईमान भलाई दसों दिशा फैलेंगे।
समय सुनहरा खुले द्वार पट हम आंखो देखेंगे।
आशा और विश्वास लिए कोशिश में लगना है।

कहर

सुनामी के कहर से वचें
उन वेवस, वेघर
और वेसहारों की दुनिया वसाने
पूरा देश जुटा है,
अफसोस!
आदमी आज भी
अपनों के हाथों लुटा है।

(सीप साभार)

कविता

गर्मी में एक पंखे की तरह

– विमल कुमार

मैं तुम्हें एक सपना देकर जा रहा हूं
वर्षों तक यह मेरे पास रहा
मेरे तकिये के भीतर फूल की तरह
खुशबू की तरह कमरे में
मेरी नींद की बेंच पर बैठा रहा
किसी से गुफ्तगू करते हुए दिन-रात
यह सपना भी मुझे किसी ने दिया था
बचपन में एक किताब की तरह
मुझे याद नहीं वह कौन शख्स था
एक छोटा सा सपना था
यह दुनिया अगर बदल जाती
तो मुझ जैसे करोड़ों लोग
सांस ले सकते थे हवा में
पर यह दुनिया आज तक नहीं बदली, अलबत्ता
थोड़ी और मुश्किल हो गयी है
पहले से ज्यादा
अब सपने की जरूरत भी पहले से ज्यादा बढ़ गयी है
इसलिए मैं जा रहा हूं
तुम्हारे पास अपना यह सपना देकर
जैसे कोई किसी को देकर जाता है अपना विश्वास
तुम भी मरने से पहले
किसी को देकर जाना जरूर
मेरी तरह यह सपना
जिस तरह इतिहास में
सदियों से चल रहा है यह सपना
कुछ लोगों की आंखों में होता हुआ
सारे सपनों से सुंदर है
दुनिया को बदलने का सपना
अगर दुनिया बदली
तो तुम भी बदल जाओगी जरूर
और तब मुझे समझ पाओगी
प्यार कर पाओगी मुझसे
जो नहीं कर पा रही हो अब तक, नहीं समझने के कारण
दुनिया के नहीं बदलने की वजह से
इसलिए मैं यह सपना देकर जा रहा हूं
जो मुसीबत के दिनों में तुम्हारे काम आयेगा
जरूर किसी दिन
रख लो, इसे अपने पास गर्मी में एक पंखे की तरह।

समाज विकास में वर-वधू परिचय

आपकी पत्रिका 'समाज विकास' ने एक नये 'वर-वधू परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत वैवाहिक सम्बंधों हेतु संक्षिप्त वर-वधू परिचय का निःशुल्क प्रकाशन आरम्भ किया है।

इच्छुक अभिभावकों से अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्री का नाम, शिक्षा, उम्र, जाति, गौत्र, कद, रंग आदि विवरण सम्पादक, समाज विकास, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७, फोन व फैक्स ०३३-२२६८ ०३१९ के नाम आमंत्रित है।

कविता

नई सरकार, नई उम्मीदें

– ताऊ शेखावाटी

अपेक्षाएं उद्योग की, पूरण होगी खास
सकल जगत उद्योग को, है यह पूरी आस।

❖ ❖ ❖

मार्क्स, मारवाड़ी तथा, ममता की सरकार
तीनों ही मिलकर करें, सुप्रयास-सुविचार,
सुप्रयास-सुविचार, अगर बंगाल दुबारा
होय बनाना इक "सोनार बांग्ला" प्यारा,
पुनः अग्निकन्या "ममता" को डगर-डगर पर
देनी होगी अग्नि परिक्षा, संभल-संभल कर।

❖ ❖ ❖

भर उमंग उत्साह मन, ममता की सरकार
"पथ विकास पर अग्रसर" होगी हर इक बार।

❖ ❖ ❖

ममता की सरकार पर, है जन को विश्वास,
होगा हर इक क्षेत्र में, नित चहुंमुखी विकास।

❖ ❖ ❖

बहुत चल रही नेक है, ममता की सरकार,
होगा सकल प्रदेश का, हर सपना साकार।

❖ ❖ ❖

स्वस्थ नीति अरु श्रम कठिन, ममता की पहचान
रंग लाएगी देखना, सब विधि जन कल्याण।

❖ ❖ ❖

चुनौतियां तो है बहुत, भारी माहिं प्रदेश
पर क्षमता संघर्ष की, ममता रखे विशेष।

❖ ❖ ❖

विश्लेषण अति सूक्ष्म से, लगा मुझे यह सार
सफल रहेगी हर तरह, ममता की सरकार।

व्यंग्य

फटी जीन्स

– शमीम शर्मा

आजकल अमेरिका में रहते हुए जो बात मुझे सबसे ज्यादा अचम्भे में डाल रही है, वह है यहाँ की फटी जीन्स। लोग बड़ी से बड़ी कार से उतरते है, शानदार माल के बड़े से शोरुम में जाकर लाखों की शॉपिंग करते है, पर उनकी जीन्स पर ध्यान दें तो नीचे से लेकर घुटनों तक वह कई जगहों से फटी या घिसी होती है। एक दिन जब मेरी बेटी ने भी फटी हुई जीन्स पहनी तो मैंने उसे एडी से चोटी तक दो-तीन बार देखा। माँ होने के नाते पूछे बिना नहीं रहा गया। जवाब मिला कि आजकल यहाँ फटी जीन्स का फैशन है। मैं काफी देर तक सोचती रही कि ये भी क्या फैशन हुआ? जगह-जगह से फटी या घिसी जीन्स किस संस्कृति या विकास की निशानी है? हमारा युवा वर्ग फटी जीन्स पहन कर क्या संकेत दे रहा है? एक समय था जब नई पैंट पहन कर उसे बहुत दिनों तक नई रखने की हर संभव कोशिश की जाती थी, पर जल्दी ही घुटनों से खिड़कियाँ झाँकने लग जाती थी। फटी जगह पर थेगड़ी लगाने का काम भी स्यानेपन से किया जाता था। उस समय के खेल भी ऐसे होते थे कि पैंटो का घिसना और घिस-घिस कर कई जगहों से फट जाना सामन्य था। क्लास में किसी के भी आने पर बार-बार खड़े होने और बैठने पर भी अनेक बार पैंट के फटने की आवाज आती, तो सहपाठी गर्दन घुमाकर देखते थे कि किस की पैंट फटी है? स्याही, रंग, कीचड़, पॉलिश, ग्रीस आदि के निशान तो नई पैंट पर शीघ्र ही अपनी जगह बना लेते थे, और इन दागों को मिटाने और छिपाने की भरसक कोशिश की जाती थी। इस कोशिश में कई बार पैंट अपना असली रंग खो देती थी या यूँ कहें कि आज की शब्दावली में स्टोनवाश स्टाइल में आ जाती थी। पैंट का यह बिखरा-बिगड़ा रुप पहनने वाले के परिवार की दयनीय आर्थिक स्थिती की एकमुश्त जानकारी देने में समर्थ था।

आज ऐसी ही फटी-कटी और घिसी या दागदार पैंटे उच्च दर्जे के फैशन की सूचक बन गई है और पहनने वाले की अमीरी और प्रतिष्ठा का पता देती है। वह भी जमाना था, जब घर बिठवा कर दर्जी से घरों में एक ही थान के कपड़े से सभी की एक जैसी पैंट सिलवाई जाती थी। आज भी तो एक ही तरह की नीली जीन्स ने समूचे देश के छोटे बड़े लोगों को अपनी चपेट में ले लिया है। क्या यह नहीं लगता कि घर बैठे उसी दर्जी से सबने अपने-अपने साइज की जीन्स सिलवा ली है। यह अलग बात है कि तब दर्जी की दाल-रोटी मुश्किल से चलती थी और आज भी वह उसी किल्लत में हैं, पर जीन्स की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ रातों-रात माला-माल हो रही है।

जोरहाट शाखा का स्वाधीनता दिवस समारोह

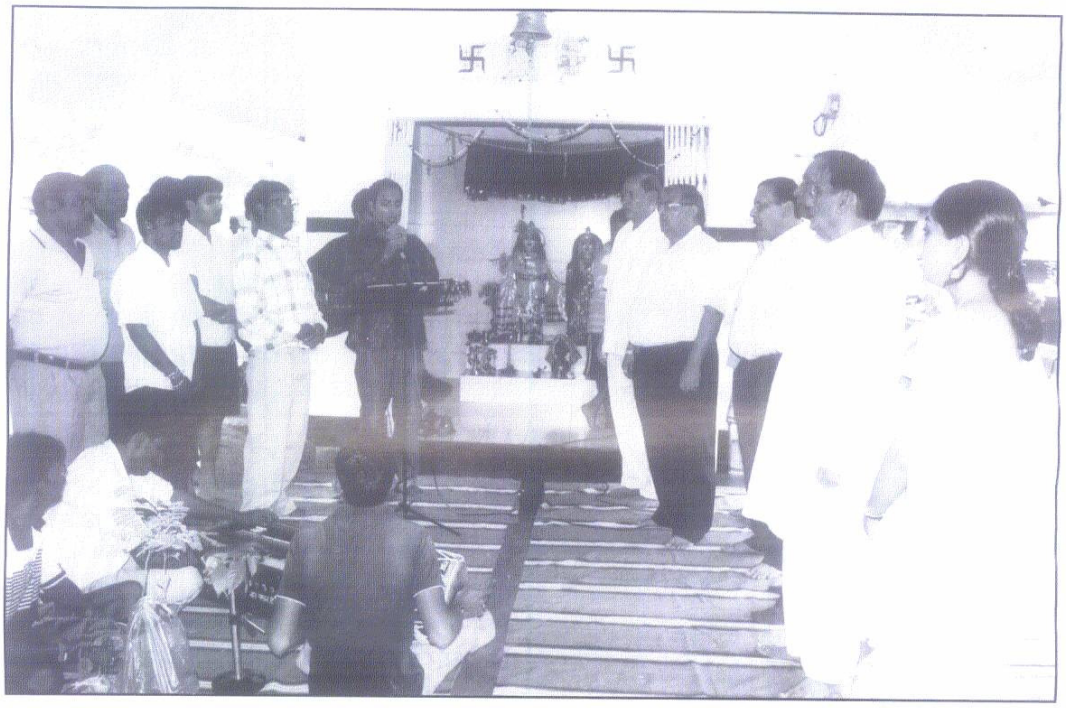

६५वें स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य मे मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा द्वारा कल्याणपुर हरिजन कालोनी में फल-मिठाई वितरण एवं वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर वहाँ स्थित श्री राधाकृष्ण मन्दिर प्रांगण में एक सभा आयोजित की गई। सभा में शाखाध्यक्ष श्री बाबुलाल गगड़ ने जोरहाट से पधारे महानुभावों का परिचय कराया तथा हरिजन भाईयों की कुशलता की कामना की। उपस्थित जोरहाट न्यायालय की न्यायाधीश श्रीमती लीजा तालुकदार ने सभी को स्वाधीनता दिवस की शुभकामना दी। श्री मारवाड़ी ठाकुरबाड़ी के अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर सिंघी एवं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के संचालक डा. शिव भगवान अग्रवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभा में राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, राजकुमार सेठी, अनिल केजड़ीवाल, रामकुमार शर्मा, कन्हैयालाल हरलालका एवं अनुप कुमार दुगड़ भी उपस्थित थे। सभा का संचालन राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल ने किया।

बिहार प्रादेशिक की मासिक रपट

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष हनुमान प्रसाद सरावगी के निधन पर १८ जुलाई २०११ को सम्मेलन सभाकक्ष में शोक सभा का आयोजन किया गया।

अधिवेशन के बाद ४५ आजीवन सदस्य बनाये गये हैं।

पटना शाखा द्वारा प्याऊ लगायी गयी। भागलपुर शाखा द्वारा महाराणाप्रताप जयन्ती मनाई गई।

प्रान्तीय समाचार

उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन गठित

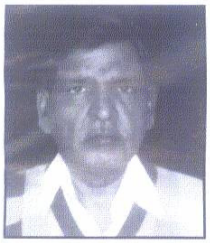

श्री रणजीत कुमार जालान
अध्यक्ष

श्री रंजीत टिवड़ेवाल
महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की हरिद्वार में नयी प्रान्तीय शाखा, उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का गठन हुआ। इसकी कार्यकारिणी में अध्यक्ष श्री रणजीत कुमार जालान सहित छह लोग शामिल है। श्री गोपाल बगड़िया उपाध्यक्ष, श्री रंजीत टिवड़ेवाल महामंत्री एवं श्री विजय गोपाल व श्री संजय काजलीया संयुक्त मंत्री तथा श्री संजय भरतिया कोषाध्यक्ष नियुक्त है। शुरुआत में इस शाखा का गठन २० आजीवन सदस्यों को लेकर किया गया, फिलहाल इनकी संख्या बड़ाने पर जोर दिया जा रहा है।

कार्यकारिणी

श्री रणजीत कुमार जालान	(अध्यक्ष)
श्री गोपाल बगड़ीया	(उपाध्यक्ष)
श्री रंजीत टिबड़ेवाल	(महामंत्री)
श्री विजय गोयल	(मंत्री)
श्री संजय काजलीया	(मंत्री)
श्री संजय भरतीया	(कोषाध्यक्ष)

सेवा को उन्मुख उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन ने गंगादशहरा एवं निर्जला एकादशी पर लगभग ५००० लोगों को खिचड़ी परोसी एवं शर्वत सेवा दी। कांवड़ मेले के दौरान दो दिवसीय भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें प्राथमिक चिकित्सा की भी व्यवस्था थी। लगभग साढ़े पॉच हजार लोगों ने इस निःशुल्क सेवा का लाभ उठाया। भविष्य में संस्था ने निःशुल्क जॉच शिविर लगाने का कार्यक्रम बनाया है।

आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं
सम्पादक, समाज विकास

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन का सावन महोत्सव

धरती की प्यास बुझाने आसमां से बरसा पानी।
चारों ओर छा गयी सावन की हरियाली।।
हर्षित हो गये किसान खुश हो गये माली।
स्वागत करो मानसून का क्यों बैठे हो खाली।।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन का सावन महोत्सव शनिवार दिनांक १६-७-२०११ को समन्वय सेवा केन्द्र में मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में ८ से १४ वर्ष के बच्चों ने फेन्सी ड्रेस में प्रस्तुति दी, जिसमें विनायक खण्डेलवाल, वानी संचेती, कृष्ण शर्मा, शशी शर्मा शामिल थे। सावन से संबंधित हाउसी में सभी सदस्यों ने भाग लिया। पुरुषों के लिये आकर्षक एवं मनोरंजक गेम रखा गया। प्रश्न मंच में भी लोगों की भारी जिज्ञासा रही। सभी को पुरस्कार दिये गये। श्रीमती मंजू खण्डेलवाल के संयोजन में कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सावित्री खण्डेलवाल, अमित टीवडेवाल एवं मुरली अग्रवाल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रान्तीय महामंत्री कमलेश नाहटा ने दिया। समापन रात्रि भोज से हुआ।

अन्त में सावन की हरियाली महिला का चयन किया गया, जिसमें श्रीमति निर्मला शर्मा प्रथम व श्रीमती मंजू सखलेचा द्वितीय चुनी गयी। मौके पर अध्यक्ष गणेश नारायण पुरोहित, पुरषोत्तम संधी, दिलीप अग्रवाल, प्रभात अग्रवाल,चमन अग्राल, सुरेश अग्रवाल, तोलाराम धूत, संतोष ओसवाल, संतोष पोद्दार, दिनेश केडिया, दिनेश बजाज, प्रकाश नाहटा, श्रीकृष्ण बियानी, सुमन सादानी, दीपाली मालपानी, कविता शर्मा, डॉ. प्रदीप संचेती, डॉ. योगेश दत्त शर्मा, रमेश खण्डेलवाल, अशोक खण्डेलवाल, महेश खण्डेलवाल आदि समाज के कई गणमान्य उपस्थित थे।

SMS की दुनिया

देश-दुनिया-समाज के घटनाक्रमों पर बेहतरीन समाज की उपज का जायका आपको घर बैठे SMS पर मिलता है। कुछ को आप तुरन्त Delete करते है तो कुछ को मित्रो को Forward करते है। SMS बन गया है अपने अच्छे-बुरे दिलचस्प विचारों को सीधे आपके पास पहुंचाने का नायाब तरीका।

SMS की दुनिया में हम पाठकों से मजेदार, जायकेदार, तेज-तर्रार SMS समाज विकास को Forward करने के लिये आमंत्रित करते है जिन्हें हम Sender के नाम के साथ प्रकाशित करना चाहेंगे।

– सम्पादक, समाज विकास

1) Itna Rulaya Kisi Ne
Muskurana Bhul Gye
Dil Toda Ki Dil Lgana Bhul Gye
Dunia Ne Itne Fareb / Diya Risto k Naam par
Ab Kisiko Apna Banana Bhul Gye...

2) Jivan Milna Bhagya ki baat h
Mrityu aana Samay ki baat h
Par Mrityu k baad bhi
Logon k Dillon Mein Jivit rahana,
Yeh "KARMO" ki baat h.....

– V. S. Kalani, Nasik

3) The Most elastic
element of the
world is TIME
It maximizes the minutes,
when we are AWAITING.
minimizes the hours
when we are ENJOYING.

Everything is Easy
when you are Busy
But nothing is Easy
When you are Lazy...

Krishna, Garia, Kolkata

लघुकथा

आत्महत्या

नदी के ऊपर पुल बनाया गया, पैसा पानी की तरह बहाया गया। इस पुल के निर्माण में ठेकदार, इंजीनियर और नेताओं की मिलीभगत थी।

सभी ने सरकारी खजाने को जमकर लूटा। उद्घाटन के मौके पर ठेकेदार, इंजीनियर और नेता ने भाषण दिया।

ठेकदार – इस पुल के निर्माण में लोहा और सिमेंट भरपूर दी गई है, इस में जरा भी कंजूसी नही की है।

इंजीनियर – हमलोगों ने दिन रात एक करके ४ साल में बनने वाले पुल को तीन साल में ही बना दिया है।

नेता – इस पुल की जितनी भी तारीफ करें कम पड़ेगी। पुल इतना मजबूत बनाया गया है कि ५ साल तक रिपेयरिंग कराने की जरूरत नहीं है।

पुल – ठेकेदार और इंजीनियर का भाषण सुन कर पुल का दम घुटने लगा। जब नेता हवा में गप मार कर पुल की तारीफ करने लगे तो पुल से रहा नहीं गया। पुल ने नदी में कूद कर आत्महत्या कर ली।

– परशुराम तोदी 'पारस'

लघुकथा

सवाल

बाहर से लौटा है आदमी।

– 'यह लो साड़ी, तुमारे लिए', पत्नी को सम्बोधित करते हुए उसने कहा 'और ये लो खिलौने आपस में बाँट लेना।' बच्चे अपने-अपने खिलौने ले उछलते-कूदते बाहर लॉन की तरफ भाग गए। 'और अपने लिए! अपने लिए क्या लाए है आप?' – पत्नी की उत्सुकता जगी। 'यह, रामपुरिया चाकू! आवश्यकताओं तक पहुंचने का अन्तिम और एकमात्र साधन', उसने मुस्कुराते हुए पत्नी की तरफ देखा। पत्नी शायद कुछ भी न समझ पायी किंतु आश्चर्य चकित, पत्थर-सी खड़ी थी।

(पास–पड़ोस साभार)

हंसगुल्ले

बीवी ने अपने पति से शिकायत की – "आप जब भी किसी सुन्दर लड़की को देखते है, तो बस देखते ही रहते है। आप यह क्यों भूल जाते है कि आप विवाहित हैं?"

"अरे भूल कहां जाता हूँ" पति ने एक ठण्डी आह भरकर कहा – "उस समय तो यह अहसास और तीव्र हो जाता है।"

☺ ☺ ☺

सड़क पर धूमधाम से बारात चली आ रही थी। घोड़े पर बैठे दुल्हे के मुंह पर पट्टी बंधी था।

यह देखकर एक राहगीर ने एक बाराती से पूछा – "भैया, दुल्हें के मुंह पर पट्टी क्यों?"

बाराती ने मुस्कुराते हुए बताया – "भाई साहब, दूल्हा मोहल्ले का नेता है। उसे भीड़ देखकर बोलने की बीमारी है।"

☺ ☺ ☺

पुरुषों पर कटाक्ष करते हुए महिला ने कहा – "बहुत-से पुरुष बेचारे ऐसे भी होते हैं कि आंखें रहते हुए भी नहीं देखते और कान रहते हुए भी नहीं सुनते।"

"इसे गनीमत ही समझिये।" एक पुरुष ने प्रत्युत्तर में कहा – "लेकिन श्रीमती जी, शायद ही कोई स्त्री होगी,जो जीभ रहते हुए भी न बोले।"

☺ ☺ ☺

पति-पत्नी में किसी बात पर झगड़ा हो गया। **गुस्से में पत्नी बोली** – "अपने को ज्यादा अक्लमंद मत समझो। जब शादी का प्रस्ताव लेकर हमारे घर आये थे, तो एकदम मूर्ख लग रहे थे।"

तड़ से पति ने कहा – "मूर्ख लग रहा था नहीं, बल्कि सचमुच मूर्ख था, वरना तुमसे शादी ही क्यों करता?"

☺ ☺ ☺

एक नेताजी ने अपने सचिव को बहुत जोरों से डांटते हुए कहा – "आप मेरे भाषण में इतने कठिन शब्द क्यों भर देते हैं?" आखिर मैं भी तो समझ सकूं कि मैं क्या बोल रहा हूँ।

कविता

बंद नहीं बदलाव चाहिए

बंद,
स्कूल बंद!
दुकानें बंद!!
बाजार बंद और
यातायात ठप्प!!!
सड़कें सुनसान,
लोग नदारद,
सन्नाटे का
चीर–फाड़ करती
इंक्लाब जिंदाबाद!
जिंदाबाद इंक्लाब!!
डंडा ऊपर झंडा लाल
इंक्लाब... जिंदाबाद!
खेतों तक फैला है लाल
इंक्लाब... जिंदाबाद!
जोर–जुलुम के मुँह पे लाल
इंक्लाब... इंक्लाब!!
इस महा जुलूस में
सिर्फ
झंडे–ही–झंडे है
आदमी नहीं
तेतत्थ से एक
आवाज आती है–
हमें
बंद नहीं
बदलाव चाहिए!
बदलाव!!
सत्ता और
व्यवस्था के विरूद्ध
आखिर कब तक चलेगा–
महायुद्ध?

(साभार बड़ावाजार संवाद)

अश्लीलता के खिलाफ लामबंद हों

– **भानीराम सुरेका**
पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री :
अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन

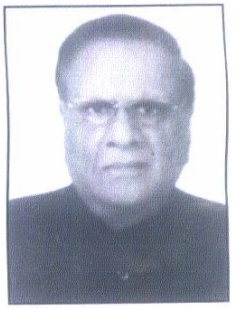

सभ्यता के आदिम युग में मनुष्य जंगलों, पहाड़ों में नंगे ही रहता था क्योंकि तब तक उसे कपड़े पहनने का सलीका नहीं आया था। जैसे जैसे सभ्यता का विकास हुआ मनुष्य नें अपने को सभ्य बनाने के लिए कपड़ों का इस्तेमाल शुरु किया। कपड़े को लज्जावसन की संज्ञा दी गई। भारत में कपड़े पहनने को संस्कार से जोड़ा गया। भले ही विभिन्न समाजों में कपड़े पहनने का ढंग अलग-अलग हो, पर कपड़ा पहनना आवश्यक हैं।

मारवाड़ी समाज में एक समय आंदोलन का मुद्दा ही यही था कि कैसे पर्दा प्रथा को खत्म किया जाये। अभी कुछ साल पहले तक घरों में बहुओं का बड़ों के सामने घूँघट डालकर आना पड़ता था। घूँघट भी ऐसा कि सामने पड़ी चीज़ भी कई वार दिखाई नहीं देती थी। बेटियों के लिबास पर भी पावंदी थी। पुरुषों को भी कुछ भी, कैसे भी कपड़े पहनने की छूट नहीं थी। यानि कपड़ों के व्यवहार में सामाजिकता झलकती थी। सामाजिक मंचों से पर्दा को खत्म करने के लिए कई बड़े आंदोलन हुए और इस आंदोलन को भारी विरोध का भी सामना करना पड़ा। तथाकथित आधुनिक दौर के आने से जिस चीज़ पर सर्वाधिक प्रहार हुआ वह है "कपड़ा"। कपड़ों के आकार-प्रकार में लगातार वदलाव व कमी को नवीनता का सूचक मान लिया गया। देखते ही देखते कपड़े छोटे होते गए और मनुष्य बड़ा बनता गया। खासकर नारी समाज में यह धारणा गहरे पैठ गई कि जितना तंग और छोटा कपड़ा होगा, सुंदरता उतनी बढ़ेगी।

टेलीविज़न के कार्यक्रमों में प्रतिस्पर्धा चल रही है कि कौन कितना अश्लील कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकता है। नवीनता के नाम पर पौराणिकता को भी अश्लील तरीके से प्रस्तुत करने की कोशिश हो रही है। लोकप्रिय संगीत "पॉप" बना तो लगा था कि इस दिशा में यह एक क्रान्तिकारी खोज साबित होगा पर जल्दी ही यह "पाप" संगीत में तब्दील हो गया। "पाप" के नाम पर अश्लीलता परोसने की जैसे गारंटी मिल गई। नई पीढ़ी को यह सबसे अधिक पसंद आया और वह इसकी रौ में वह निकली। पॉप के नाम पर नारी कलाकारों के वदन के कपड़े लगातार छोटे होते रहे एवं फूहड़ता का नंगा नाच शुरु हो गया। आज स्थिति यह है कि परिवार के सारे सदस्य एक साथ बैठकर टेलीविज़न के कार्यक्रम नहीं देख सकते। सवाल उठता है कि क्या महिलाओं को इस अश्लीलता और फूहड़ता का विरोध नहीं करना चाहिए? क्या कुछ रुपयों के लिए कपड़े उतारने से उनकी गरिमा बढ़ती है? क्या भारत और भारतीयता की बात करने वालों को इसके खिलाफ लामबंद नहीं होना चाहिए? हमारी परंपरा में स्त्री को छेड़ना पाप है मगर जब स्त्री स्वयं अपने कपड़े उतारकर छेड़छाड़ को बढ़ावा दे तो क्या स्त्री पर अंकुश लगाना हमारा कर्तव्य नहीं है? भारतीय नारियां विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में नंगी तस्वीर छपवाकर मालामाल हो रहीं हैं।

बिड़ला परिवार के वरिष्ठ सदस्यों में मैंने भारतीयता की झलक देखी है। वर्षों से बिड़ला परिवार में संपर्क रहा है। अभी कुछ दिनों पहले मेरे पुस्तक लोकार्पण समारोह में बाबू बसंत कुमार जी बिड़ला और उनकी विदूषी अर्धांगिनी सरला जी बिड़ला पधारी थी। उनका पहनावा, शिष्टाचार देखकर सर गर्व से ऊंचा हो जाता है। इस उम्र में भी सरला जी का मारवाड़ी सुलभ पोशाक पहनकर आना अनुकरणीय है। इसी तरह बिड़ला परिवार की एक अन्य महिला सुमंगला जी को किसी ने आज तक खुले सर में नहीं देखा। सिर्फ धन होने से ही संस्कार नहीं आ जाता। संस्कार के लिए धन से अधिक मन को जाग्रत करना पड़ता है। आखिर अपनी संस्कृति को अपनाए रखने में गुरेज ही क्या है? संस्कृति हमें दुनिया के सामने एक पहचान देती है। जब हम दूसरों की नकल करने को ही अपनी संस्कृति बना लेंगे तो हमारी अपनी संस्कृति का मिटना तो निश्चित है।

यह भारत की सनातन संस्कृति का ही असर है कि विदेशों में बैठे लोग भी अब इस संस्कृति को अपनाने लगे हैं। हमारी वेश-भूषा, खान-पान के तौर-तरीके, रहन-सहन और सामाजिक परंपरा का अध्ययन करके वे अपने देश में उसका प्रचार कर रहे हैं। रिश्तों की अहमियत को अब वे महत्व दे, नई जीवन शैली का विकास कर रहे हैं। सामाजिक तौर पर कपड़े पहनने के प्रति भी उनमें नई चेतना आई है।

समय आ गया है कि हम अश्लीलता और फूहड़ता का खुलकर विरोध करें अन्यथा एक दिन आधुनिकता के नाम पर हमारी अपनी ही संस्कृति विलुप्त हो जाए, तो कोई अचरज की बात नहीं होगी।

वृद्धावस्था जीवन का अभिशाप नहीं, वरदान है –

– मुकुन्ददास माहेश्वरी

वृद्धावस्था जीवन का अभिशाप नहीं, कुदरत का वरदान है।
बुजुर्गियत बख्शी है खुदा ने, यह तो जिन्दगी की शान है।।

वृद्धावस्था जीवन की परिपक्वावस्था है। इस उम्र में मनुष्य जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धियाँ, सामाजिक एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर जीवन के सम्माननीय पद पर सुशोभित होता है।भारतीय समाज में तो वृद्धों को ज्ञान अनुभव, दूरदर्शिता, परिवार प्रमुख तथा समाज के श्रेष्ठ नागरिकों के रूप में अभिनंदित किया जाता रहा है, इसीलिए संस्कृत साहित्य में 'नं स सभा यत्र वृद्धाः नं सन्ति' कहा गया है अर्थात वह सभा नहीं है जहाँ वृद्ध न हों।

किंतु आधुनिकता के दौर में टूटते संयुक्त परिवार के कारण हमारे देश में वृद्धों के प्रति दिनों दिन नजरिया बदल रहा है। कुछ दशकों पूर्व जहाँ वृद्धों की परिवार में मुखिया के रूप में धाक थी अब अधिकांश परिवारों में इनकी स्थिति अतिरिक्त भार के रूप में देखी जाती है। संपूर्ण जीवन अपना खून पसीना तथा सारी सुख सुविधाओं का होम करने वाले वृद्ध जिनका उद्धेश्य बच्चों के भविष्य सँवारने में व्यस्त रहता था, अब उनकी स्थिति उसी परिवार तथा बच्चों के बीच में नकारात्मक हो गई है। इस दृष्टि से राजेश खन्ना की 'अवतार' फिल्म वर्तमान वृद्धावस्था का सजीव चित्रण प्रस्तुत करती है जिसमें फिल्म का नायक राजेश खन्ना अपने तीनों बेटों के पालन-पोषण तथा रोजगार दिलाने में अपना संपूर्ण जीवन होम कर देता है। वृद्धावस्था में जब वह विकलांग हो जाता है तो उसके बच्चे तथा बहुएँ उसे अपमानित कर घर से निकाल देते हैं। आज एकल परिवारों तथा आधुनिकता में मस्त अधिकांश युवा पीढ़ी अपने माता पिता को अपमानित करने में नहीं चूकते। वे उन्हें या तो वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं या कुंभ की भीड़ में परित्याग कर देते हैं। कुछ वृद्ध तो अपमानित होकर मौत को स्वीकार कर लेते हैं तथा कुछ जिल्लत की जिंदगी गुजारने को विवश हो जाते हैं। कुछ परिवारों में तो वृद्धों की स्थिति बिलकुल नौकरों की तरह होती है। समझदार बच्चे अपने माता पिता को बड़े सम्मान के साथ रखते हैं, लेकिन अधिकांश वृद्ध अपनी शारीरिक कमजोरी, दीर्घ-बीमारी, जीवन-सुरक्षा तथा जीवन निर्वाह की आपाझापी में परेशान रहते हैं। इनकी समस्या के समाधान में कुछ सरकारी योजनाएं भी क्रियान्वित की गयी हैं, जो पर्याप्त नहीं हैं।

वृद्धावस्था में शारीरिक दुर्बलता के कारण कई समस्यायें चुनौती बनकर आती हैं जैसे – बीमारी व इनका इलाज, पारिवारिक सपोर्ट, आर्थिक चिन्तायें, सुरक्षा आदि। इन अवस्थाओं के कारण वृद्ध परेशान रहते हैं। परिवार या बेटे-बहू का उचित सपोर्ट न मिलने से कई मानसिक व्याधियों के शिकार हो जाते हैं।

वृद्ध होना एक सामाजिक व स्वाभाविक प्रक्रिया है, प्रत्येक व्यक्ति उम्र के इस पड़ाव पर पहुँचता है, लेकिन जीवन में भविष्य के प्रति तैयारी न करने के कारण कई समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। इन समस्याओं के मुख्य कारण इस प्रकार हैं –

(१) वृद्धावस्था के लिए कोई सुरक्षात्मक योजना न बनाना।
(२) पूरा खर्चा बच्चों तथा घर बनाने में ही लगा देना।
(३) भविष्य के लिए निवेश एवं मेडिकल बीमा न करना।
(४) बच्चों पर पूर्ण रूपेण आश्रित होना।
(५) बच्चों को प्रापर्टी पर पूरा स्वामित्व दे देना।
(६) स्वास्थ्य, सुव्यवस्थित दिनचर्या, के प्रति उदासीन होना आदि।

वृद्धावस्था को कई लोग अभिशाप समझते हैं, तथा स्वयं को घुट घुट कर जीने के लिए विवशता मानते हैं। चूँकि अधिकांश वृद्ध लोग शारीरिक रूप से अस्वस्थ होते हैं अतः सुरक्षा तथा सहयोग के लिए उन्हें अपने बच्चों पर आश्रित रहना पड़ता है तथा समय-समय पर अपमानित होना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में कई स्वाभिमानी वृद्ध तो घर छोड़कर यहाँ वहाँ चले जाते हैं। वृद्ध आश्रमों की स्थिति भी अच्छी नहीं कही जा सकती। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि वृद्ध व्यक्ति अपने को अभिशप्त न समझें, जीवन की निर्धारित योजना बनाकर नियमित स्वास्थ्य, आचार-विचार तथा योग के द्वारा अपने को स्फूर्तिवान बनाये रखें। यह जीवन की परिपक्व अवस्था है। अपने जीवन के फैसलों का उपयोग कर स्वावलंबी बनें तथा जब तक जिये शानदार ढंग से जियें। किसी ने ठीक ही कहा है –

उठो समय के स्वर पहचानों, संकल्पों का मौसम है,
बढ़ती हुई परिस्थितियों में, मन का कैसा भ्रम है।।
मन में लो मजबूत इरादे, परिवर्तन के साथ चलो।
जीवंत इरादों को लेकर, तुम आगे अपने साथ चलो।।

व्यंग्य

फ़िक्र कर अमीरों की ग़ालिब.....

– स्वामी नित्यानंद

मुंह पक गया पढ़ते-पढ़ते कि भारत में अमीरों और गरीबों के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। जिसे देखो वही गरीबों की बढ़ती संख्या बताने पर उतारू है। बार-बार सरकारी और असरकारी स्त्रोतों से ढिंढोरा पीटा जा रहा है कि भारत अब खरबपतियों, अरबपतियों और असंख्य करोड़पतियों का देश बनता जा रहा है और लखपतियों और हजारपतियों की कोई गिनती ही नहीं है, जिधर देखो भरे पड़े हैं। ऐसे में गरीब और गरीबी कहां फिट होती है। मेरी समझ में नहीं आता।

फिर भी सयानों की सुनकर मैंने गरीबी तलाशने का निश्चय किया। अपनी मारुति-एस्टीम की टंकी फुल करवा ड्राइवर को साथ ले मैं निकल पड़ा। सबसे पहले दिल्ली में नवनिर्मित हवाई-अड्डे पर गया। पार्किंग में गाड़ी ड्राइवर के सुपुर्द कर मैं अंदर गरीब देखने गया। आधे घंटे के अथक प्रयास के बाद भी मुझे एक गरीब नहीं मिला। गरीबी के दर्शन भी नहीं हुए न अंदर न बाहर। मैं कत्तई निराश नहीं हुआ। मझमें भागीरथ के संस्कार हैं। वहां से मैं अशोका होटल गया। वहां लोगों ने बताया कि ये सरकारी होटल है और सरकार की नजर में अब न गरीब रहे, न गरीबी। तो भैया! यहां कहां गरीब मिलेंगे। मैं वहां से भी चल दिया। मौर्या शेरेटन, ओबेराय इंटरकांटिनेंटल, हयात रिजेंसी जैसे अनेक बड़े-बड़े होटल छान मारे, कुछ नहीं हुआ।

मैं रास्कोलनिकोव (दोस्तोयेव्स्की) तो हूं नहीं जो हमेशा चीथड़े पहन पीला या सफेद चेहरा लिये दलिद्दरों के बीच भटकता रहूं। मैं अभिजात्य वर्ग से हूं। मुझे गरीब या गरीबी से कोई सहानुभूति नहीं, हां उनके दर्शन की लालसा जरूर है। मैने सोचा जहां गरीबी की सर्वाधिक चिंता (चिंतन नहीं) की जाती है वहां जाकर देखना चाहिए। मैं संसद भवन पहुंचा। आराम से अंदर प्रवेश कर गया जैसे बड़ा अपराधी थाने में प्रवेश पाते हैं। संसद के गलियारे में गरीब ढूंढता रहा, जहां एक पत्रकार बंधु मिले और तपाक से मुझसे पूछा – 'आप यहां कैसे?' मैंने खुशी-खुशी चेहरे पर अभिजात मुस्कान लाते हुए उत्तर दिया – 'गरीब देखने आया हूं'। वे आंखें फैलाते आश्चर्य से उवाचे 'देश की अमीर पंचायत में गरीब देखने आये हो, भई वाह! देखो, खूब देखो।' वे माननीयों की तरफ संकेत करते बोले 'ये सब विशिष्ठ गरीब हैं' और हंसने लगे।

नेपोलियन होता तो वह भी हताश हो जाता। मैं नहीं हुआ। वहां से सीधा नयी-दिल्ली रेलवे स्टेशन लपक लिया। राजधानी एक्सप्रेस और शताब्दियां छान मारी, कहीं कोई गरीब नहीं दिखा। फिर मैं मल्टीप्लेक्स और मॉल की तरफ भागा। वहां भी दूर-दूर तक न गरीब दिखा न गरीबी। अब मैं क्या करूं, कहां जाऊं? मैं गरीब देखने के लिए हलकान हुआ जा रहा था। गरीब को गरीबी से जूझने में इतना पसीना नहीं आता होगा, जितना मुझे गरीबी देखने की कोशिश में आ रहा था। लौटने में अचानक मेरा ध्यान अपने ड्राइवर पर गया। मैंने उससे पूछा 'तुमने गरीब देखा है?' वह भौचक्का मेरी तरफ देखता बोला 'हां साहब'। मुझे दिखा सकते हो, मैंने पूछा। उसने कहां – एक गरीब तो आपके सामने ही है। मैंने किंचित रोष में कहा – 'तुम गरीब नहीं हो सकते'। अमीरों की जूठन पर पलनेवाले गरीब नहीं होते, गरीब अलग ही होते हैं। उनके कपड़े फटे और मैले-कुचेले होते हैं। चेहरे बीमार और पीले होते हैं। शरीर हड्डियों का ढांचा होता है। पेट में पंद्रह दिन से खाना नहीं होता, महीनों से नहाये नहीं होते। सोचते-सोचते मुझे अपने आप पर झुंझलाइट होने लगी कि कहां फालतू चिंतन में फंस गया। मूड फ्रेश करने के लिए मैं गाड़ी के बाहर के नजारे लेने लगा। सिनेमा के बड़े से पोस्टर 'सिंह इज किंग' पर नजर पड़ी। मैं सिंह और किंग के अंतर्संबंध पर सोचने लगा, अच्छा लगा।

लेकिन गरीबी चिंतन ने फिर आ घेरा। मैंने ड्राइवर से अक्षरधाम चलने को कहा। वहां से 'इस्कॉन' पहुंचा। उधर कारों और लकदक लोगों की लाइनें नजर आयीं, गरीब नजर नहीं आया। शाम हो चली थी। अपनी कोठी पर लौटा, अफसोस हो रहा था कि गरीब के चक्कर में व्यर्थ ७०० का पेट्रोल जला दिया। बिवी पानी लेकर हाजिर थी। मैंने बीवी से फिश फ्राई और चिकन पकौड़े की फरमाइश की। फ्रेश होकर कपड़े बदले। फ्रीज से बर्फ और सोड़ा निकाला। रैक से ब्लेक लेबल निकाली और टीवी के सामने बैठ गया। एक घूंट भी अंदर नहीं गया था कि ख्याल आया शायद टीवी में गरीबी दर्शन हो जाये। मगर वहां भी गरीबी कहीं नहीं थी। फिर जाम पर जाम खींचता रहा और रिमोट पर उंगलियां फेरता रहा। नशा जब अपने ऊरुज पर आने लगा तो उंगलिया फैशन टी वी पर रुक गयी। गरीबी भुला मैं फैशन देखने में मशगूल हो गया, बड़ा मजा आया। समझ में आया कि नशा अच्छी चीज है। यह गरीबी (अपनी या औरों की) भुला देता है।

सुबह उठकर अखबार देखा तो उसमें फिर गरीबी की चर्चा। समझ में नहीं आता कि सरकार गरीबों की इतनी फिक्र क्यों कर रही है। उसे अमीरों की फिक्र करनी चाहिए। अमीर देश की शोभा है। गरीबों के लिए अजायबघर या चिड़ियाघर बनवा कर, उन्हें वहां रख देना चाहिए और देखने का टिकिट लगा देना चाहिए। टिकिट लो, गरीब देखो।

सम्पादकीय

अन्ना बनाम सरकार

– सीताराम शर्मा

जन समर्थन एवं विश्वसनियता के तराजू पर अन्ना का पलड़ा भारी

इन पंक्तियों के लिखे जाने तक देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ दिल्ली के रामलीला मैदान में गांधीवादी अन्ना हजारे के अनशन का दसवॉ दिन है। अन्ना एवं सरकार के वीच कोई सहमति नहीं बन पा रही है। सर्वदलीय बैठक, प्रधानमंत्री का स्वंतत्रता दिवस पर लाल किले से भाषण अभी तक बेनतीजा रहा है।

अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान को इतना जनसम्पर्क मिलेगा इसका किसी को, सरकार को तो एकदम नही, सपने में भी कोई गुमान न था। संभवतः अन्ना एवं उनके साथियों को भी नहीं। इसकी सफलता के पीछे शायद एक महत्वपूर्ण कारण यह रहा है कि इसका नेतृत्व किसी राजनैतिक दल या राजनेता के हाथ में नही था। अन्ना के आन्दोलन में आम आदमी को एक आशा की किरण दिखायी पड़ रही थी।

राजनेताओं एवं राजनैतिक दलों से आम आदमी का साफ तौर पर मोहभंग हो गया है। विभिन्न राजनेताओं के भ्रष्टाचार के मामले महीनों से सुर्खियों पे रहे है। करोड़ो अरवो के घपलों के आरोप है। मामले कोर्ट में झूल रहे हैं। जनता राजनेताओं के झूठे वादों से वार-वार आहत हुई है और उसकी आस्था को तोड़ा है।

अन्ना एवं सरकार के वीच काई ठोस सहमति नहीं वन पाने का मुख्य कारण

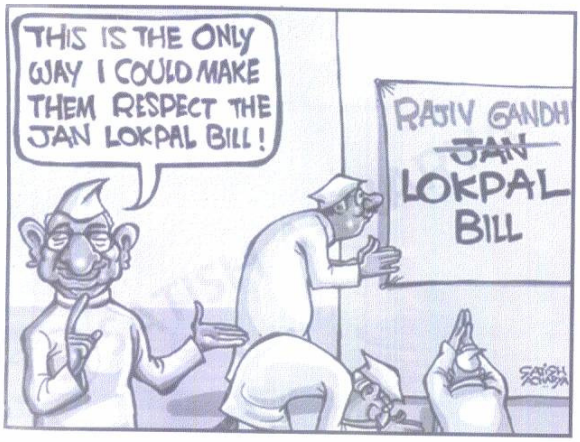

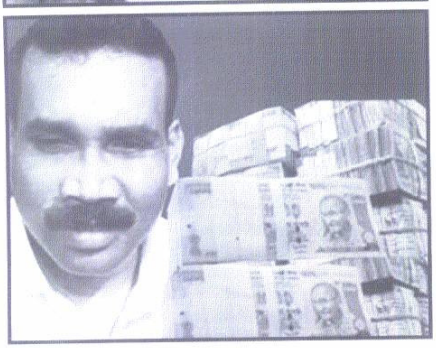

हैं सरकार की ईमानदारी एक विश्वासनीयता में कमी। गिरती हुई साख एवं छवि। आम आदमी लोकपाल बिल एवं जनलोकपाल बिल की बारीकियों को नही जानता लेकिन अन्ना आन्दोलन की विश्वसनियता सरकार से कहीं अधिक है इसलिये उसे अन्ना के आन्दोलन में अधिक विश्वास है, जबकि सरकार पर उसे पूरा अविश्वास है।

दिल्ली की सरकार एवं सत्तारुढ़ कांग्रेस अब असमंजस की स्थिति में है। अन्ना ने १६ अगस्त को अनशन की घोषणा की और वह घोषणा जल्द ही एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन बन गयी। अन्ना एवं उनके साथियों को पहले जेल भेजना, फिर छोड़ना सरकार की कार्यशैली का फूहड़पन ही दर्शाता है। अरविन्द केजरीवाल ने केन्द्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद को यह कहते बताया है कि सरकार में मतभेद है एवं कपिल सिब्बल तथा पी. चिदम्बरम नरम नीति के पक्ष में नहीं है। प्रणव मुखर्जी जैसे तपे-तपाये वरिष्ठ नेता के मुख से अन्ना के साथियों को यह कहना कि "अन्ना की सेहत आपका मामला है" बौखलाहट दर्शाता है।

विपक्षी दल भी कहीं न कहीं असमंसज की स्थिति में दिखते है। सर्वदलीय बैठक की एकमात्र उपलब्धि – अन्ना से अनशन तोड़ने की अपील – को महान उपलब्धि नहीं कहा जा सकता। भाजपा एवं वामपंथी दलों ने सरकारी लोकपाल बिल को वापस लेने की बात की है लेकिन इससे आगे वे भी डॉवाडोल नजर आते है। भाजपा में इस अस्पष्ट स्थिति पर प्रश्न उठने आरम्भ हो गये है। यूं तो कांग्रेस के कुछ सांसदो ने भी विरोध के मीठे स्वर उठाये है जिनका उदेश्य अन्ना को समर्थन देने से अधिक अपने अगले चुनाव के समय इस 'वक्तव्य' के टेप सुनाकर वोट बटोरने की दुरगामी नीति दिखती है।

भ्रष्टाचार एक ऐसा प्रश्न है जिसपर कोई दल या व्यक्ति विरोध व्यक्त नहीं कर सकता। जब सवाल उठता है भ्रष्टाचार के दानव के दमन के लिये

एक प्रभावशाली एवं सशक्त लोकपाल विल की – सरकार इसका भी विरोध नही कर सकती। फिर विरोध कहा हैं?

दुर्भाग्यवश सरकार ने गणतांत्रिक पद्धति एवं भ्रष्टाचार को आमने-सामने लाकर खड़ा कर दिया है। ऐसा लगता है, सरकार कह रही है कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगे या नही हमें हमारी गणतांत्रिक व्यवस्था को बनाकर रखना है। यह मामला भ्रष्टाचार बनाम गणतंत्र का नहीं है, इसे इस रूप में पेश कर सरकार अन्ना एवं उनके साथियों को गणतंत्र विरोधी या संसद विरोधी साबित करने पर तुली हुई है। यह मामला भ्रष्टाचार बनाम संसद का भी नही है। यह सर्वविदित है कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है एवं किसी भी कानून बनाने के लिए संसद की स्वीकृति आवश्यक है। सवाल इतना है कि आप किस कानून पर मुहर लगाना चाहते है, या चाहते भी है कि नहीं, क्योंकि सरकार का पिछले कई दशकों का इतिहास इस बात का गवाह है कि लोकपाल के मामले में सरकार ईमानदार नहीं है। इसलिये आज सरकार की विश्वसनियता जनता की तराजू में अन्ना के १०० के मुकाबले जीरो है।

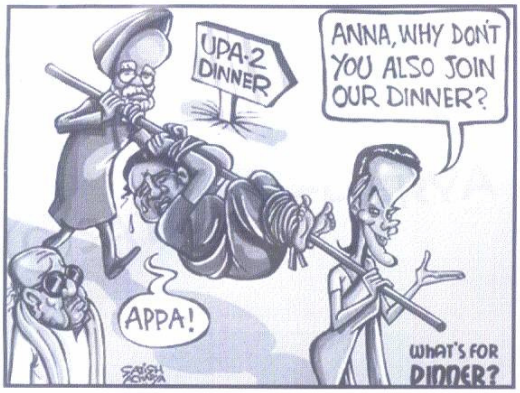

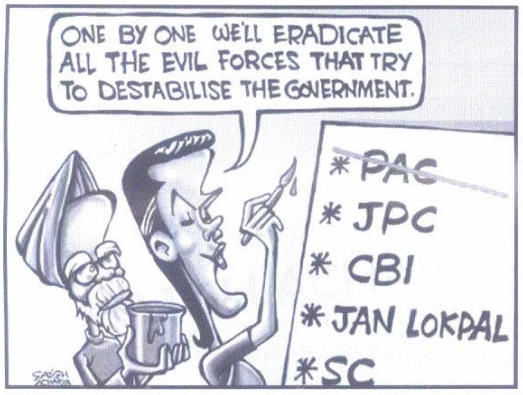

ANNA SMS

आजादी की लड़ाई में गांधीजी के साथ जमनालाल बजाज, घनश्यामदास बिड़ला

आज अन्ना के साथ अरविन्द केजड़ीवाल, मनीष सिसोरिया जय मारवाड़ी समाज

Once Kapil Sibbal, Digvijay Singh & Lalu Prasad Yadav were travelling in a helicapter

Sibbal drops a 100 Rs. Note & says "I made one poor Indian happy"

Digvijay drops two 50 Rs. Notes and says "I made two poor Indians happy"

Lalu drops 100 one Rupee Notes and says "I made 100 poor Indian happy"

Hearing this the Pilot says I will drop down all three of you and make 121 crores Indian Forever happy.

वाह रे कांग्रेस गजब तेरा खेल
कसाब को बिरयानी और अन्ना को जेल

Where is the Capital of India
In Switzerland

Jailor to Kasab, why are you so happy?

Kasab : I am not Indian, I hate Indian
I killed Indians & still I am sure
I am safe in India

Journalist : To Anna Hazare
Sir, Why are you so sad

Anna : I love my India and Indians
But I am not sure
When I will be killed

Is Anna's movement more difficult than Gandhi?

Ans. Yes, because Gandhi was fighting the British and they were men of character

Anna is fighting people with no character.

जानते है जन लोकपाल बिल पेश या पास क्यों नही हो रहा है सरकार में मंत्रियों को रकम नहीं मिली है अभी तक।

गाँधी विचारों के प्रतिमूर्ति हैं, अन्ना हजारे

किशन बाबूराव हजारे, जिन्हें आज देश अन्ना हजारे के नाम से जानता-पहचानता है, वे गाँधी विचारों के एक ऐसे समाजसेवक हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश को समर्पित कर दिया है। जिस गाँव में ८० प्रतिशत लोग भुखमरी के शिकार थे, उस गाँव की सब्जी विदेशों में निर्यात करने का सपना अगर किसी ने साकार कर दिखाया है, तो वह हैं, अन्ना हजारे। जिनकी कभी हार न मानने की संकल्प-शक्ति ने आज पूरे देश को भ्रष्टाचार के खिलाफ बगावत करने हेतु खड़ा कर दिया है। अन्ना हजारे का बचपन बहुत ही गरीबी में बीता है और इन्होंने सातवीं तक की पढ़ाई ही की है। बाद में फौज में शामिल हो गये और १९६५ में पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान वाल-वाल बचे थे, उसी वक्त अन्ना ने आजीवन अविवाहित रहकर देश सेवा करने का संकल्प ले लिया। अन्ना हजारे ने सेवा का काम अपनी जन्मभूमि से ही आरम्भ किया। इनका गाँव रालेगाँव सिद्धि देश के अन्य ७ लाख गाँवों की तरह पिछड़ा हुआ था, लेकिन अन्ना ने वर्षा जल संग्रह, सौर ऊर्जा, वायो गैस और पवन ऊर्जा के उपयोग से गाँव को इतना स्वावलंबी बना दिया, जिसे पूरी दुनिया से देखने लोग आज भी आते हैं। इनकी समाजसेवा व समाज-कल्याण भावना के लिए इन्हें 'पद्मश्री' व 'पद्म विभूषण' से भी सम्मानित किया जा चुका है। अपने राज्य महाराष्ट्र में अन्ना ने कई बार भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम चलायी है, जिसमें कई मंत्रियों को इस्तीफा तक देना पड़ा था। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की राह पर चलनेवाले अन्ना 'सादा जीवन उच्च विचार' की कहावत को अपने जीवन में चरितार्थ करते हैं। अचानक मीडिया में छा जाने पर कई समाचार-पत्रों के प्रतिनिधियों ने कौतुहलवश अन्ना से पूछा कि आप राजनीति में कब आ रहे हैं? इस पर अन्ना ने साफ कह दिया कि राजनीति तो अब कीचड़ बन चुकी है, मैं कीचड़ में पैर कैसे रखूँ? अन्ना का यह दो टूक जवाब साफ संकेत देता है कि वे राजनैतिक भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए कितने दृढ़ और संकल्पित हैं। – *गांधी-दर्शन समिति (राष्ट्रीय) के सौजन्य से*

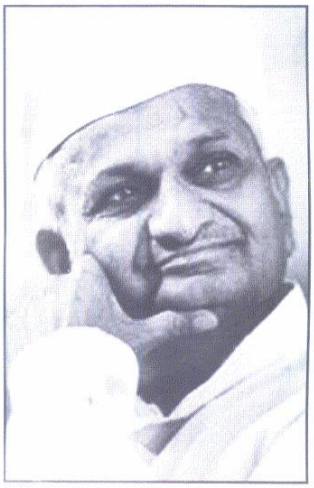

भारत स्वर्णिम दौर की ओर

सर्वशक्तिमान इंगलैंड और अमेरिका जैसे देश जब भारत का लोहा मानने लग जाए तो फिर इस देश को न ही चीन से डरने की आवश्यकता है और न ही पड़ोसी देश पाकिस्तान से। सच तो यह है कि भारत इस समय एक स्वर्णिम दौर की तैयारी में जुटा है। रामराज्य मात्र परिकल्पना नहीं। रामराज्य पुनः आएगा। हम अपने सपनों के भारत को साकार करने में जुटे है। आजादी से पूर्व गांधी, पटेल, शास्त्री, सुभाष जैसे देशभक्तों ने जिस महान भारत की परिकल्पना की थी, सचमुच वो दिन आज दूर नहीं। अब तो समय एकदम सामने है, बस दो कदम और बढ़ाते है, पर संभाल कर क्योंकि फिलहाल हम बारूद के ढेर पर ही खड़े है। एक गलत कदम भी पूरा-का-पूरा लक्ष्य भंग कर सकता है। लेकिन, संभवतः अब हमन वो जमीन छोड़ दी। ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का खेल भले ही खत्म न हों, भ्रष्टाचार को भागना ही होगा।

बेशक! अन्ना ने गांधी को पुनर्जीवित किया है।

– **रामअवतार पोद्दार**
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

जन-जन की गुहार जन-लोकपाल

एक चतुर नाग,
करे शत-प्रहार,
मुँह फाड़-फाड़,
डँसे बार-बार।
जन चीत्कार करे बार-बार,
मचे हाहाकार,
आह! अत्याचार।
ये दण्डप्रहार के बहाने हजार,
ये लोकाचार का बलात्कार,
यहाँ भ्रष्टाचार! वहाँ भ्रष्टाचार!
अंधी सरकार, चहुँ अंधकार,
भारत बीमार, रोग दुर्निवार।
जन अब हमारी सुन ले पुकार,
पारदर्शिता की यह बयार,
बहती हीं जाये, रुक्के न यार।
मंथन करें, कर लें विचार,
जनता की मांग जन-लोकपाल,
जन की तलवार जन-लोकपाल।
यह नव-संग्राम, दूषण संहार,
भ्रष्टों की हार, जन-लोकपाल।
अन्ना, किरण और केजरीवाल,
समरांत तक मानें न हार।
कहो बार-बार, चीखो बार-बार,
जन की गुहार जन-लोकपाल,
अंतिम सवाल अब आर-पार,
जन-लोकपाल या मृत्युद्वार,
मद्द में चिंघार, जन-लोकपाल।
जन-लोकपाल! जन-लोकपाल!

– प्रकाश 'पंकज'

चिंगारी

– शम्भु चौधरी

हो अंधेरा कितना ही घना, प्रकाश लाना ही होगा।
हो अंधेरा कितना ही घना, दीपक जलाना ही होगा।।
भले तड़पता हो अंधेरा, मेरी लौ से यदा-कदा,
आँखें मूंदते ही वह झूमता रहता सदा।
आज भी है अंधेरा, कल भी रहेगा सदा
पर चिराग को जलने के लिये
लड़ना होगा उससे सदा।
बस सोच लो-
तुम जल रहे हो....तुम जल रहे हो....
इस सोच के भय से ही,
कांप जायेगा अंधेरा सदा।
भले ही उसने बसा लिया हो साम्राज्य,
दुनिया में अपना सदा,
पर इक चिंगारी से भी कांप जायेगा
वो सदा।

भ्रष्टाचार की गिरफ्त

– सलीम रेहमान खिलजी

समाज में पनपता व शिष्टाचार का रूप लेता भ्रष्टाचार का यह आचरण एक ऐसी दीमक बन रहा है जो देश को खोखला कर रहा है। इस भ्रष्टाचारी दीमक से गांव, शहर, कस्बे और महानगर तक इसकी भेंट चढ़ चुके है।

इसे भी देश का दुर्भाग्य ही समझा जायेगा कि भ्रष्टाचारी पूरी ताकत के साथ व्यवस्था को चुनौती देते हुये लामबंद हो रहे हैं और कॉर्पोरेट बनी हुई मीडिया इनका साथ दे रही हैं। आखिर, उनके पालनहार भी तो यही भ्रष्टाचारी बने हुए हैं। देश में यह पहली बार देखा जा रहा है कि भ्रष्टाचारियों का काकस खतरनाक तरीके से ताकतवर बनता जा रहा है और व्यवस्था पूरी तरह से कमजोर, बेबस और लाचार बनी हुई है। चाहे वह भ्रष्ट मंत्री हो या संतरी, आईपीएस हो या आईएएस हो अथवा भ्रष्ट पत्रकार - ये सभी पूरी ताकत के साथ बचाव की मुद्रा में बने हुए हैं। भ्रष्टाचार की लड़ाई के पुरोधा बने पूर्व युवा प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी ने पहली बार इस सच को खुले रूप से स्वीकार किया कि दिल्ली से भेजा एक रुपया गांव में आते-आते १५ पैसे ही रह जाता है।

कविता

क्या हुआ

रामचरण यादव 'याददाश्त'
प्रधान सम्पादक, नाजनीन

मांगते बस यही दुआ
भरा रहे हर खाली कुंआ,

राहों से कोई न भटके
ना हो विचलित कभी युवा,

आज भी जोश कायम है
साठ के हुए तो क्या हुआ,

कुछ न रहा अब कहने को
पर मन में आए अहम् मुआ,

जर्जर कश्ती दूर किनारा
चिंतित है मौसी चाची बुआ,

मंहगाई चौथेपन में दौड़ती
मानो बिल्ली पे हावी चूहा।

हँसना मना है

दो पड़ोसियों में किसी बात को लेकर विवाद शुरु हुआ। मामले ने तूल पकड़ा और दोनों ओर से पथराव और मारपीट के पश्चात् बंदूके तन गई।

मोहल्ले वालों की तमाम कोशिशों के बावजूद दोनों पक्ष टस से मस नहीं हुए।

तभी एक आदमी दोनों पक्षों के बीच में कूद पड़ा और बोला – "चलानी है, तो मुझपर गोली चलाओ, मुझे मार डालो।"

इसके बाद दोनों पक्षों की बंदूके नीचे हो गई। बाद में पता चला – बीच में कूदने वाला व्यक्ति दोनों पक्षों का कर्जदार है।

कविता

महायुद्ध की तैयारी

धराशायी होते आदर्शों के लिए
कुछ तो करना होगा, पार्थ!
कब तक
यूं ही भटकते रहोगे
अब
टिक कर
कुछ ठोस करना होगा
रमता जोगी नहीं
'राम' बनना होगा
राम की भूमि में छिड़ा संग्राम
रोकना होगा
यह
धर्म और इतिहास
दोनों के खिलाफ है।
हमें
पुरजोर तैयारी के साथ
लंका (?) चलना है
महायुद्ध
अपनी भूमि पर नहीं
दुश्मन के द्वार पर करना है।

रोशनी

मैं
पेट के लिए
सिर्फ नारे लिखता हूं
और सरकारी पीठ पर
पोस्टर चिपकाता
झंडे के नीचे खड़ा
राष्ट्रीय गीत गुनगुनाता हूं
ताकि
अंधेरे का डर कम हो सके।

– शिव सारदा

SR RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

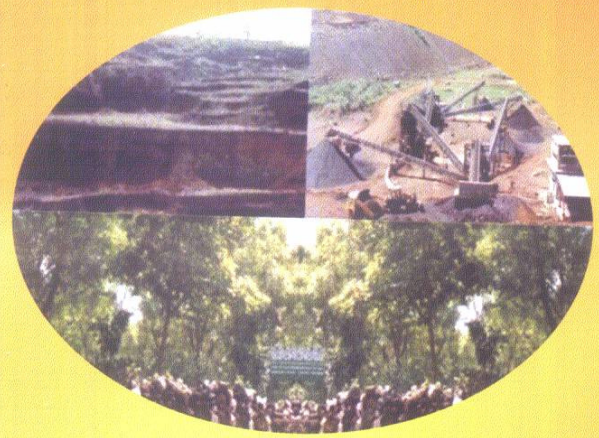

- ***IRON ORE*** - *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** - *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442

Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI

KOLKATA 700017, INDIA

Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161

Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035

DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 27689/277391/021

Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND

RUNGTA OFFICE

SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201

DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256621/256321

Fax: 91-6582-257521

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 August, 2011
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com

T/WB/LM-007
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL